I4F2K2

विद्यालय के लिए तैयारी हेतु मार्गदर्शिका

आँगनवाड़ी कार्यकत्री और शिक्षकों के लिए हस्त पुस्तिका

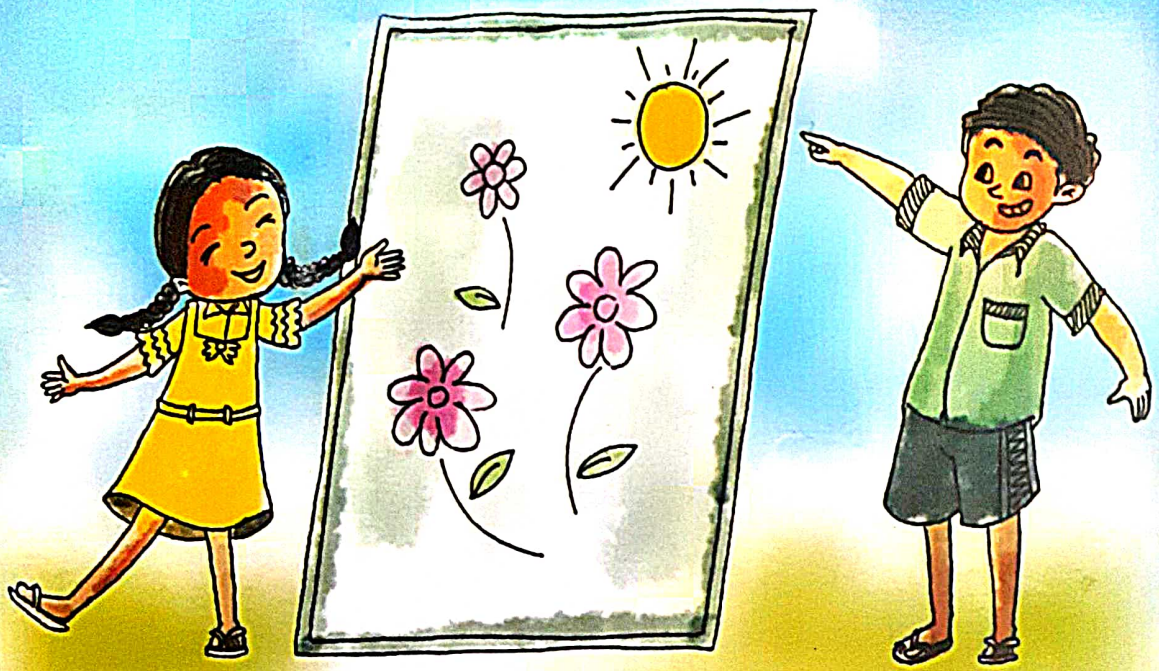

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

उत्तर प्रदेश सरकार

विद्यालय के लिए तैयारी हेतु मार्गदर्शिका

आँगनवाड़ी कार्यकत्री और शिक्षकों के लिए हस्त पुस्तिका

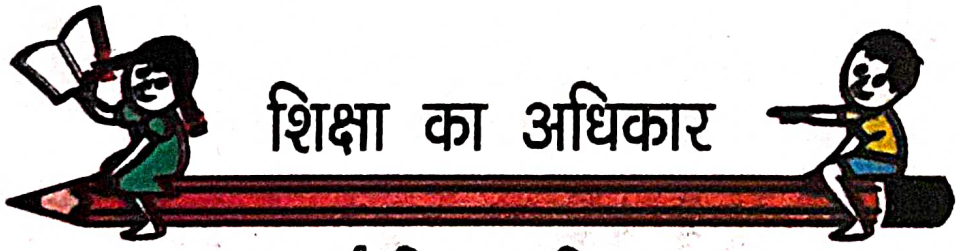

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

कोड नं०–91 जनरल ऑफसेट प्रिंटिंग प्रेस प्रा०लि०, प्रयागराज, वर्ष 2021–22 हेतु

जनरल ऑफसेट प्रिंटिंग प्रेस प्रा० लि०, प्रयागराज द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित 90,145 प्रतियाँ

अध्याय	विषयवस्तु	पृष्ठ संख्या
अध्याय 1	विद्यालय के लिए तैयारी	1
1.1	विद्यालय के लिए तैयारी क्या है ?	1
1.2	विद्यालय की तैयारी और समता	5
1.3	विद्यालय की तैयारी और विशेष आवश्यकता वाले बच्चे	5
1.4	विद्यालय की तैयारी और लिंग आधारित संवेदनशीलता	6
अध्याय 2	बच्चों की तैयारी	8
2.1	विद्यालय हेतु तैयार बच्चों की विशेषताएं	9
2.2	बच्चों को विद्यालय हेतु तैयार करने में भाषा का महत्व	9
2.3	प्रारंभिक भाषा हेतु गातिविधियाँ	9
2.4	बच्चों को विद्यालय हेतु तैयार करने में प्रारंभिक गणितीय गतिविधियों का महत्व	14
2.5	गतिविधि कोना की स्थापना	19
2.6	विद्यालयी तैयारी हेतु कक्षाओं के लिए योजना तैयार करना	20
अध्याय 3	तैयार विद्यालय	23
3.1	तैयार विद्यालय क्या है?	23
3.2	एक अनुकूल भौतिक वातावरण	24
3.3	सामाजिक तथा भावनात्मक रूप से सहयोगी वातावरण	24
3.4	लिंग समानता हेतु संवेदनशील	24
3.5	विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की जरूरतों के प्रति संवेदनशील	25
3.6	आँगनवाड़ी केंद्र से प्राथमिक विद्यालयों में सुचारू गमन हेतु संयुक्त गतिविधियों को बढ़ावा देना	25
अध्याय 4	तैयार माता–पिता/ परिवार	34
4.1	तैयार माता–पिता/ परिवार	34
4.2	नियमित तौर पर अभिभावक–शिक्षक बैठक	34
4.3	ई सी सी ई (प्रारंभिक शिक्षा एवं देखभाल) दिवस मनाना	34
4.4	ईसीई में माता–पिता का शामिल होना (समावेशन)	35

Z6M2Z4

विद्यालय के लिए तैयारी

विद्यालय के लिए तैयारी क्या है?

बाल्यावस्था में गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक शिक्षा बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए महत्वपूर्ण है। इसके पाठ्यक्रम में खेल और गतिविधियों का संतुलन होना चाहिए जो जीवन में सीखने की नींव तैयार करता है। बच्चे जब सीखने की मनः स्थिति के साथ विद्यालय में प्रवेश करते हैं, तो उनकी सफलता, विद्यालय में ठहराव तथा सीखने की संभावना अधिक रहती है (प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और विकास पर परामर्श समूह, 2008)। विद्यालय हेतु बच्चों की तैयारी के संबंध में आमतौर पर लोगों में कुछ गलत धारणाएं होती हैं, जहाँ वे यह सोचते हैं कि बच्चों के स्कूल के लिए तैयारी हेतु पढ़ना, लिखना और अंकगणित को अवश्य पढाया जाना है। इसके लिए अक्सर बच्चों में बिना समझ रटटा मारकर सीखने के लिए दबाव डाला जाता है। प्रारंभिक स्तर पर सीखने का इस प्रकार से सरलीकरण करना बच्चों की वृद्धि और विकास के लिए हानिकारक है। जब बच्चों के साथ उपयुक्त गतिविधियों के माध्यम से कार्य किया जाता है, तो उनमें सीखने की रुचि पैदा होती है जिससे वह विद्यालय में बेहतर प्रदर्शन करते हैं। पूर्व प्राथमिक शिक्षा वह चरण है जहाँ भविष्य में सीखने की नींव रखी जाती है। विद्यालय के लिए तैयारी शैक्षणिक तैयारी से अलग होता है, जैसे – तैयार बच्चे, तैयार स्कूल और तैयार माता–पिता। नेशनल अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन करिकुलम फ्रेमवर्क 2014 यह कहती है कि तैयारी की अवधारणा बच्चों की तैयारी से कहीं अधिक विस्तृत है।

यह दस्तावेज़ विद्यालय हेतु तैयारी को तीन अलग–अलग आयामों के सहसंबंध के रूप में परिभाषित करता है;

क) बच्चों की तैयारी

ख) विद्यालय की तैयारी और

ग) परिवार और समुदाय की तैयारी।

ये दस्तावेज़ यह सुझाव देता है कि बच्चे, विद्यालय और परिवार को तब तैयार माना जाता है जब वे अन्य आयामों के साथ जुड़ने के लिए आवश्यक दक्षताओं और कौशलों को प्राप्त कर लें तथा घर से ईसीसीई केंद्र और बाद में प्राथमिक विद्यालय में बच्चों के सफर को प्रोत्साहित करते हों (P.24) यह समझना महत्वपूर्ण है कि विद्यालय हेतु तैयारी को विकसित करने के लिए तीन आयामों द्वारा "क्रमिक परिवर्तन" और "उपलब्धियों" का अनुभव प्राप्त करना चाहिए (यूनिसेफ 2012) जैसा कि नीचे दिए गए चित्र 1 में दिखाया गया है:

प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (**ECE**) 3–6 आयु वर्ग के बच्चों को शिक्षा प्रदान करती है। यह बच्चों की औपचारिक एवं व्यवस्थित शिक्षा का प्रथम चरण है। इसे प्री स्कूल या पूर्व प्राथमिक शिक्षा भी कहते हैं। इसकी शिक्षा आंगनवाड़ी, नर्सरी स्कूल, प्री स्कूल, प्रिपरेटरी स्कूल, किन्डरगार्टन, मोंटेसरी स्कूल, तथा सरकारी या गैर सरकारी विद्यालयों स्थित प्री प्राइमरी सेक्शन के माध्यम से प्रदान की जाती है।

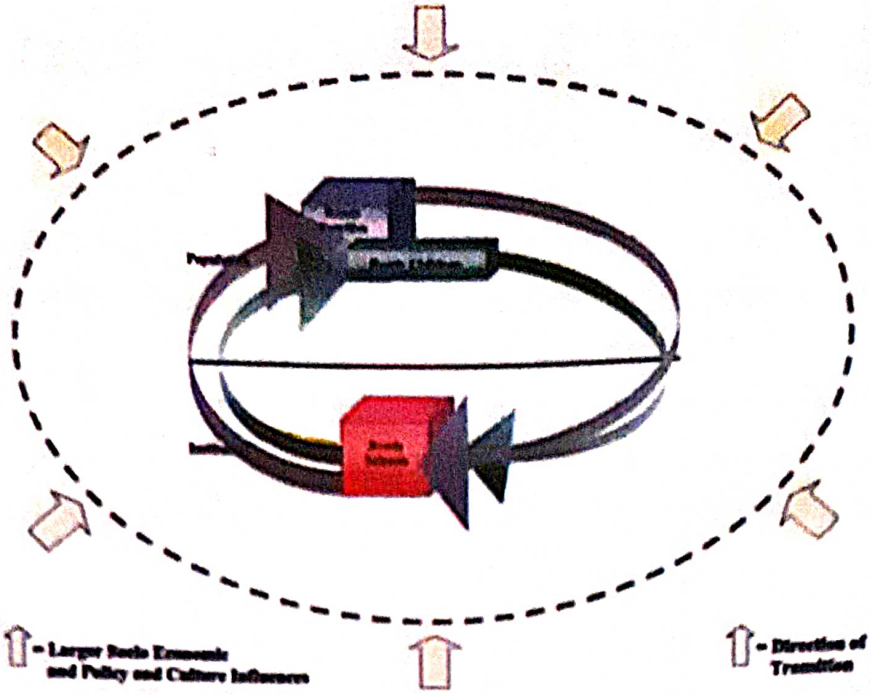

चित्र: दक्षताओं - विद्यालय परिवर्तन की क्षमता को विकसित करना
स्रोत: विद्यालय हेतु तैयारी: एक वैचारिक संरचना, UNICEF (2012)

सहज रूप से परिवर्तन और दक्षताओं की प्राप्ति निम्नलिखित तरीके से तीन आयामों में मदद करेगी:

क. बच्चों को विद्यालय वातावरण में सीखने के लिए आने तथा व्यवस्थित होने में सहज होना चाहिए।

ख. विद्यालय को, नयी व्यवस्था में बच्चों की मदद करने तथा उनके अनुकूल समावेशी और सीखने का माहौल बनाने में सक्षम होना चाहिए।

ग. बच्चों का नामांकन और उनकी शिक्षा में निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए परिवारों को साथ देना चाहिए।

चूंकि विद्यालय की तैयारी को अक्सर सीखने की तैयारी के रूप में समझा जाता है, जो सहीं नहीं है, इसलिए नीचे दी गई सारणी–1 में विद्यालय के लिए तैयारी क्या है और क्या नहीं है, के बीच अंतर को रेखांकित किया गया है।

विद्यालय के लिए तैयारी क्या है	विद्यालय के लिए तैयारी क्या नहीं है
बच्चों को विद्यालय में सीखने के लिए आवश्यक कौशल, ज्ञान और दृष्टिकोण प्रदान करना	बच्चों को विद्यालय में अच्छा प्रदर्शन करने के लिए आवश्यक कौशल, ज्ञान और दृष्टिकोण प्रदान करना
एक औपचारिक वातावरण में सीखने की तैयारी और कार्य करना जहाँ उन्हें निर्देशों को समझना तथा तय समय सीमा में कार्य करना	पठन, लेखन और अंकगणित का कोई पाठ्यक्रम आधारित शिक्षण न करवाना
बच्चों को खेल–आधारित गतिविधियों में संलग्न करके पढ़ने–लिखने और संख्याओं के साथ काम करने तथा सीखने का आधार तैयार करता है	पठन, लेखन और अंकगणित का कोई पाठ्यक्रम आधारित शिक्षण न करवाना
भौतिक तथा सामाजिक–भावनात्मक कौशलों को शामिल करता है, जैसे निर्देशों का पालन करने की क्षमता, दूसरों के साथ सहयोग करते हुए खेलना, भावनाओं को समझना, प्रदर्शित और नियंत्रित करना, सामूहिक कार्य करने में सक्षम होना, अपनी बात को साझा करने में सक्षम होना और नियमों का पालन करना, आत्म–नियमन का विकास करना।	यह औपचारिक तौर पर कक्षा अनुशासन और आज्ञा पालन सिखाने का कार्यक्रम नहीं है

टेबल–1: विद्यालयी तैयारी क्या है ?

विद्यालय की तैयारी हेतु विकास के लिए आवश्यक रणनीतियों पर जाने से पहले, भारतीय संदर्भ में स्कूली तैयारी की स्थिति को समझना महत्वपूर्ण है।

विद्यालय के लिए तैयारी : भारतीय संदर्भ

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा पर विशेष जोर दिया है। इसने बाल्यावस्था के आरंभिक वर्षों के महत्व को प्रकाशित करते हुए विद्यालयी ढाँचे के पुनर्गठन का सुझाव दिया है ताकि 3–8 आयु वर्गों के बच्चों को आरंभिक शिक्षा नियमित तरीके से प्रदान की जा सके। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का यह सुझाव आरंभिक बाल्यावस्था शिक्षा पर हाल में ही किए शाधों द्वारा भी पुष्ट होता है। ये शाध यह बताते हैं कि बहुत बड़ी संख्या में बच्चे बुनियादी साक्षरता एवं गणितीय कौशल भी प्राप्त नहीं कर पाते हैं। अतः प्री–स्कूल से ही इन पर विशेष जोर होना चाहिए।

ऐन्यूअल स्टेटस ऑफ एजुकेशन रिपोर्ट (रुरल) 2019 के अनुसार भारत में विद्यालय के प्रारम्भिक वर्ष इसकी तैयारी के लिए चुनौतीपूर्ण हैं। असर रिपोर्ट 2018 के निष्कर्षों से पता चलता है कि ग्रेड–1 में 42.7% ग्रामीण बच्चे अपनी मातृभाषा में वर्णमाला के अक्षरों को नहीं पहचान सके और 35.7: बच्चे 1–9 तक की संख्या को नहीं पहचान सके।

हाल ही में मिश्रित अनुसंधान विधि का उपयोग करते हुए पहला बड़े पैमाने पर अध्ययन सेंटर फॉर अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन एंड डेवलपमेंट (CECED), अंबेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली द्वारा आयोजित किया गया था। इसका शीर्षक इंडियन अर्ली चॉल्डहुड एजुकेशन इम्पैक्ट स्टडी (AECEA) जिसे 5 वर्षों की अवधि में वर्ष 2011 से 2016 के दौरान आयोजित किया गया था, जिसमें भारत में ईसीसीई के विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया गया था। इस अध्ययन में 5 वर्ष की आयु में बच्चों की विद्यालयों के लिए तैयारी तथा प्राथमिक ग्रेड के शुरुआती वर्षों में उनके प्रदर्शन के मध्य संबंध को शामिल किया गया था। इस अध्ययन में विद्यालय की तैयारी को संज्ञानात्मक (भाषा सहित) और व्यक्तिगत सामाजिक कौशलों व व्यवहार को शैक्षिक प्रदर्शन और सामाजिक समायोजन के साथ जोड़ा गया था (pg.25)। इस अध्ययन में 5 साल की उम्र में बच्चों की विद्यालय हेतु तैयारी तथा संज्ञानात्मक और भाषा क्षेत्र में कम अंक प्राप्त हुआ।

असर (2018) इंडियन अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन इम्पैक्ट स्टडी (आई ई सी ई आई 2017) और इसी तरह के अन्य अध्ययनों के आँकड़े, भारत में बच्चों के निम्न स्तर की विद्यालयी तैयारी की ओर इंगित करते हैं। ऐसी चुनौतीपूर्ण स्थिति में भी इंडियन अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन इम्पैक्ट स्टडी आशा की एक किरण के रूप में यह सुझाव देता है कि विद्यालयी तैयारी के निम्न स्तर के बावजूद पूर्व प्राथमिक विद्यालय में भागीदारी के एक वर्ष के बाद बच्चों की विद्यालयी तैयारी के स्तर में उल्लेखनीय संबंध पाया गया था। इसके अलावा अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि बच्चों में एक मजबूत नींव विकसित करने के लिए एक वर्ष के लिए गुणवत्तापूर्ण, खेल–आधारित और विकासोन्मुख शाला–पूर्व पाठ्यक्रम के साथ बच्चों का जुड़ाव पूर्व साक्षरता और पूर्व–गणितीय दक्षताओं की प्राप्ति की गति को तीव्र कर सकता है (p–29)।

इस मैनुअल का उद्देश्य विद्यालयी तैयारी के तीनों आयामों– बच्चों की तैयारी, स्कूल की तैयारी और परिवार की तैयारी के लिए रणनीति तैयार करना है। यह आँगनबाड़ी कार्यकत्री, विद्यालयी शिक्षक, तथा 5–6 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के साथ काम करने वालों के लिए विकसित किया गया है। इस मैनुअल के तीन भाग हैं यथा – बच्चे की तैयारी (रेडी चिल्ड्रेन), विद्यालय की तैयारी (रेडी स्कूल) और माता–पिता की तैयारी

विद्यालय की तैयारी और समता

विभिन्न देशों के अंतर्राष्ट्रीय अध्ययनों के आंकड़ों से पता चलता है कि जिन बच्चों के पास इन तीन कौशलों – पढने का कौशल, गणितीय कौशल और ध्यान देने की क्षमता थी, उन्होंने विद्यालय में अच्छी शैक्षणिक उपलब्धि प्राप्त की। अध्ययनों से यह भी पता चला है कि कम आय वाले परिवारों के बच्चे बचपन में प्राप्त की गई अच्छी शिक्षा से सबसे अधिक लाभ प्राप्त करते हैं जो उन्हें विद्यालय के लिए तैयार करता है। ऐसे बच्चों की कक्षा 5 तक पहुंचने की संभावना दोगुनी तो कक्षा 8 तक के पहुंचने की संभावना तीन गुनी से भी अधिक थी बनिस्बत उन बच्चों के जिनको यह अनुभव प्राप्त नहीं था। इसलिए, समता के लिए विद्यालय की तैयारी बहुत महत्वपूर्ण है। प्रारम्भिक साक्षरता संबंधी गतिविधियाँ समता को बढ़ावा देने के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। प्रारंभिक चरण में भाषा सीखना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह बाद में और चीज़ें सीखने की आधारशिला है। वंचित घरों के बच्चों को अक्सर न तो एक प्रिंट समृद्ध वातावरण का लाभ मिलता है और न ही प्रचुर मात्रा में मौखिक भाषा में बातचीत के अवसर। उन्हें पूर्व प्राथमिक विद्यालय के माहौल के बाहर मुख्य धारा और भाषा के अन्य अकादमिक स्वरूपों के संपर्क में आने का अवसर भी कम मिलता है। एक सुनियोजित पूर्व प्राथमिक शिक्षा का वातावरण इस अभाव की भरपाई करने में मदद करता है। इसलिए शिक्षकों को एक प्रिंट समृद्ध वातावरण स्थापित करना चाहिए और बच्चों की पहुँच पुस्तकों व अन्य पठन सामग्री तक सुनिश्चित करनी चाहिए।

विद्यालय की तैयारी और विशेष आवश्यकता वाले बच्चे

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की परिभाषा "विकलांगता की श्रेणी" और चिकित्सा देखभाल से 'बच्चे के अधिकार मॉडल' के उपागम में बदलाव के कारण विभिन्न दस्तावेजों में भिन्न होती है। बाल अधिकार मॉडल विविधता के हिस्से के रूप में "विकलांगता" को देखता है और इसे मुख्यधारा में लाकर समावेशी बनाने पर जोर देता है। "प्रारंभिक वर्षों में समावेशन" का तात्पर्य है कि विकलांगता वाले बच्चों की मुख्यधारा की प्रारम्भिक शिक्षा व्यवस्था तक पहुँच होनी चाहिए ताकि वे बाल–केंद्रित शिक्षा के साथ अपनी व्यक्तिगत विकास को प्राप्त कर सकें (सिंह, 2005)। विद्यालय को सक्रियता के साथ समावेशन को बढ़ावा देना चाहिए और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के सामाजिक समावेशन में मदद करनी चाहिए। ऐसे बच्चों की सीखने की क्षमताओं के अनुरूप गतिविधियों में बदलाव करना चाहिए। इसके लिए उन्हें प्रारंभ में ही ऐसे बच्चों की पहचान करनी होगी। शिक्षकों को विकास प्रक्रिया के विभिन्न चरणों के बारे में जानकारी होनी चाहिए और उसी अनुसार उन्हें के साथ काम करने के लिए गतिविधियों की योजना तैयार करनी चाहिए। विशेष शिक्षा के प्रारंभिक केंद्रों की सीमित उपलब्धता को देखते हुए समावेशन को अपनाया जाना चाहिए। समावेशी शिक्षा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का अधिकार है, इसे उनके लिए "कुछ विशेष" या "अतिरिक्त प्रयास" के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। किसी भी अन्य बच्चों की तरह ही उनका भी यह अधिकार है।

कोड नं०–91 जनरल ऑफसेट प्रिंटिंग प्रेस प्रा०लि०, प्रयागराज, वर्ष 2021–22 हेतु

विद्यालयों को क्या करना चाहिए:

- प्रारम्भिक वर्षों में ही बच्चे की 'विकलांगता' की पहचान करना महत्वपूर्ण है। इसलिए, जन्म से ही स्क्रीनिंग करना चाहिए और माता-पिता, देखभाल करने वालों, शिक्षकों को संकेतों और लक्षणों के बारे में जागरूक करना चाहिए।
- माता-पिता, देखभाल करने वालों और शिक्षकों को लक्षणों को समझने और सही व्यक्ति, जैसे- कोई चिकित्सक या जिसको इसकी जानकारी हो, से संपर्क करने व सुझाव लेने के बारे में जागरूक किया जाना चाहिए।
- बच्चों के साथ समान व्यवहार किया जाना चाहिए ना कि उन्हें व्यक्तिगत, शैक्षणिक, सामाजिक, भावनात्मक या शारीरिक दुर्बलताओं के आधार पर अलग किया जाए।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए इस प्रकार के अवसर उपलब्ध कराएँ कि वे अपनी सर्वश्रेष्ठ क्षमता के अनुसार गतिविधियों में शामिल हो सकें।
- पाठ्यक्रम और मूल्यांकन प्रक्रिया में लचीलापन हो।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के प्रति अन्य बच्चों में संवेदनशीलता विकसित करे।
- स्थानीय तथा पारंपरिक खिलौनों को प्रोत्साहित करे।
- विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की आवश्यकता अनुसार शिक्षण या खेल सामग्री को उन अनुकूल बनाएं।

विद्यालय की तैयारी और लिंग आधारित संवेदनशीलता

जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में लिंग आधारित समाजीकरण की नींव रखी जाती है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति एक विशेष तरीके से कार्य करना सीखते हैं और ज्यादातर सामाजिक मान्यताओं, मूल्यों, मानदंडों, दृष्टिकोणों और उदाहरणों के अनुरूप चलते हैं। लिंग आधारित समाजीकरण जन्म से शुरू होता है। यह सीखने की एक प्रक्रिया होती है जिससे कोई व्यक्ति अपने लिंग के आधार पर स्वयं की सामाजिक-सांस्कृतिक भूमिकाओं पर समझ विकसित करता है। परिवार और परिवेश हमारे पारंपरिक लिंग-विशिष्ट भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को स्थापित करने या अस्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सीखने के स्थानों जैसे- पूर्व प्राथमिक पाठशाला या विद्यालयों में शिक्षक, पाठ्यचर्या तथा स्थान जिस तरह से व्यवस्थित किए जाते हैं, वे आगे यह निर्धारित करते हैं कि जेंडर को किस प्रकार से देखा जाए। लिंग भेद जैसे- लड़का या लड़की, के आधार पर अलग-अलग अपेक्षाओं का होना लिंग-विशिष्ट भूमिकाओं को तय करता है। बचपन से ही लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और लिंग आधारित एक संवेदनशील दृष्टिकोण और मान्यताओं के विकास के लिए सही वातावरण प्रदान करना आवश्यक है। ई सी सी ई के माध्यम से लिंग आधारित भेदभाव जैसे पोषण, स्वास्थ्य देखभाल या अन्य प्रकार के भेदभाव जो घर में हो सकते हैं, को दूर किया जा सकता है तथा लिंग आधारित समता की स्थिति को बढ़ावा दिया जा सकता है (अमोल्ड 2004: 10)। विद्यालयों को लैंगिक रुढ़िवादी धारणाओं को तोड़ने के लिए एक सजग प्रयास करना चाहिए क्योंकि यही वह उम्र होती है जहाँ बच्चे अपनी दृष्टिकोण और आदतें विकसित करते हैं जिनके साथ वे अपनी आगे का पूरा जीवन व्यतीत करते हैं।

लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए विद्यालयों द्वारा निम्नलिखित कदम उठाए जाने चाहिए:

- शिक्षक सक्रिय रूप से लड़कों और लड़कियों से समान अपेक्षाएँ करें।
- लड़कों और लड़कियों पर एक समान ध्यान और उन्हें अवसर दिये जाएँ।
- ऐसी कहानियों, पुस्तकों और गतिविधियों का चयन किया जाए, जो लैंगिक भेदभाव से मुक्त हों।
- बच्चों को ऐसे अवसर प्रदान करें जिससे उनमें लैंगिक अवधारणाएं विकसित हो एवं लिंग से सम्बंधित उन समझ को और बढ़ावा मिले।
- यह सुनिश्चित किया जाए कि गतिविधियों के दौरान लड़कों और लड़कियों के लिए समान रूप से भाषा शैली का उपयोग, टिप्पणियाँ करना, प्रश्नों के उत्तर देने के लिए समय देना, प्रतिपुष्टि प्रदान करना, तथा कक्षा के कार्यों में अवसर देना चाहिए। इससे वे स्वयं को और दूसरों को समान रूप से महत्व देना सीखते हैं।
- शिक्षकों को पुरुषों और महिलाओं के लिए पारंपरिक भूमिकाओं को बढ़ावा देने से बचना चाहिए।
- शिक्षकों को लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और लिंग आधारित भेदभाव जैसी प्रथाओं को रोकने के लिए माता–पिता को संवेदनशील बनाना चाहिए।
- खेल और अन्य गतिविधियों के माध्यम से जितना संभव हो उतना सक्रिय रूप से सीखने की सुविधा प्रदान करें जो कि लिंग आधारित भेदभाव से मुक्त हो। कहानियों, गीतों, गतिविधियों और सामग्रियों में लड़कियों और लड़कों, को एक ही भूमिका में चित्रित किया जाना चाहिए।
- समस्या हल करने में लड़के और लड़कियों दोनों को समान रूप से शामिल किया जाना चाहिए।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा हेतु पुरुष शिक्षकों को प्रोत्साहित करें ताकि शिक्षार्थियों को अच्छे पुरुष प्रेरणास्रोत से लाभ मिल सके।
- विद्यालय की तैयारी हेतु कार्यक्रम में भाग लेने और सहायता करने के लिए परिवारों और स्थानीय समुदाय को प्रोत्साहित करें।
- लिंग के आधार पर भेदभाव को रोकने के लिए माता–पिता को संवेदनशील बनाएं और शिक्षित करें।

भाग-१

1. बच्चों की तैयारी:

बच्चों की तैयारी से तात्पर्य है 6 वर्ष की आयु में विद्यालय में प्रवेश करने और उसके साथ सामंजस्य स्थापित करने के लिए बच्चों में विभिन्न दक्षताओं और कौशलों को विकसित करना। बच्चों की तैयारी का अर्थ है, उनमें पढ़ने, लिखने और संख्या के प्रति रुचि जागृत करना न कि बच्चों को पढ़ने लिखने और गिनती करने के लिए मजबूर करना (NECCECF, 2014)। इन कौशलों के साथ–साथ, इस प्रकार से तैयार बच्चों में अन्य कई प्रकार के कौशल जैसे दूसरों के साथ मिलकर काम करना, सीखने की गतिविधियों में प्रतिभाग करना, भावनात्मक नियंत्रण, निर्देशों का पालन, और निरंतर ध्यान देने हेतु क्षमता की आदत शामिल हैं। बाद में संख्यात्मकता और साक्षरता कौशल सिखाने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है जिससे बच्चे को आसानी से प्राथमिक विद्यालय के पाठ्यक्रम के साथ सामंजस्य बिठाने में सहजता होती है। जब बच्चे विद्यालय के लिए तैयार होते हैं, तो वे आँगनबाड़ी से प्राथमिक स्कूल में आसानी से जाने या परिवर्तन करने के लिए सक्षम होते हैं।

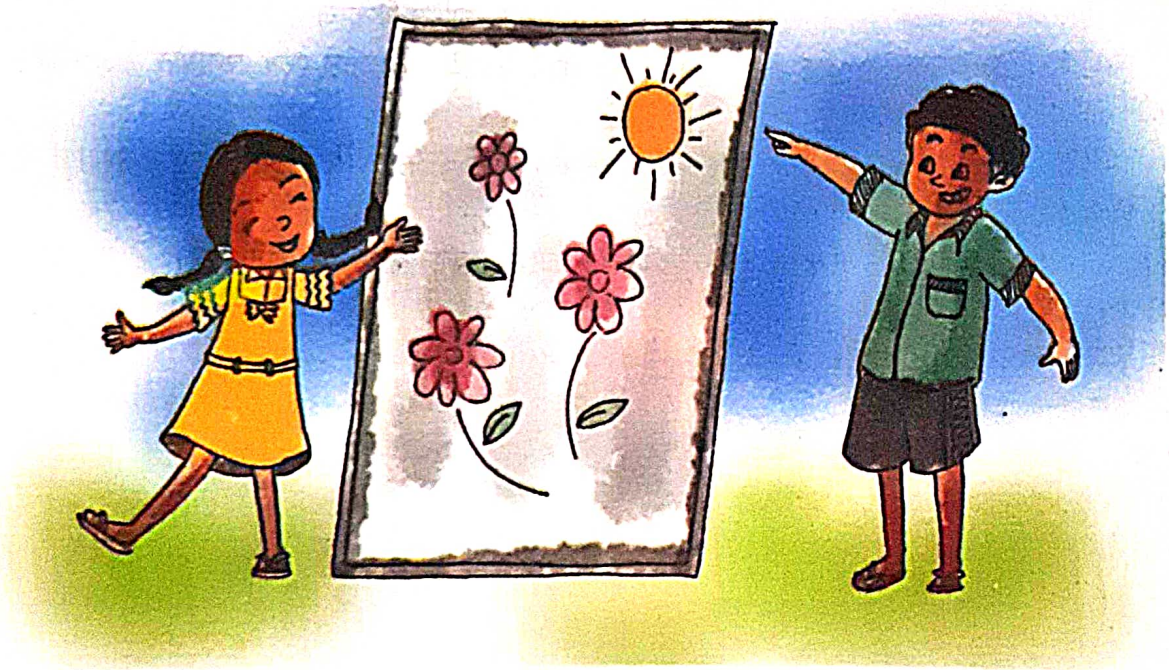

विद्यालय हेतु तैयार बच्चों में निम्नलिखित विशेषताएं होती हैं:

- वे सीखने के लिए उत्सुक रहते हैं।
- उनके पास बातचीत करने का अच्छा कौशल होता है और वह अपनी मातृभाषा/घर की भाषा में खुद को अच्छी तरह से व्यक्त करने में सक्षम होते हैं तथा अन्य भाषाओँ को सीखने के लिए तैयार रहते हैं।
- वे कई तरह की गतिविधियाँ करने और नेतृत्व करने में सक्षम होते हैं।
- वे परिवेश में उपलब्ध वस्तुओं के प्रति बुनियादी अवधारणाओं का विकास करते हैं और उनके गुणों के आधार पर वस्तुओं का मिलान, वर्गीकरण, और व्यवस्था कर सकते हैं तथा वह आकार, आकृति, रंग, गधं, स्वाद, दूरी, आदि और गणितीय समझ के लिए भी तैयार रहते हैं।
- उनके अन्दर पुस्तकों के प्रति रुचि विकसित हो जाती है और वह भाषा के लिखित रूप से परिचित होते हैं।
- वे मौखिक और लिखित भाषा के साथ संबंध बनाना शुरू कर देते हैं और पढ़ना–सिखना सीखने हेतु तैयार रहते हैं।
- वे लोगों के साथ–साथ चीजों का पता लगाने, प्रयोग करने और बात चीत करने के लिए उत्सुक रहते हैं।

खेल और गतिविधि आधारित संतुलित पाठ्यक्रम, सीखने का रुचिपूर्ण वातावरण, खिलौने, शिक्षण सामग्री व किताबों तक पहुँच, समूहों में या व्यक्तिगत रूप से अलग–अलग प्रकार की गतिविधियों में भाग लेने का अवसर प्रदान करना– ये सभी बच्चों में उपर्युक्त दक्षताओं के विकास में सहायक हैं। हालांकि, प्रारम्भिक साक्षरता और संख्यात्मकता से संबंधित कुछ विशिष्ट गतिविधियाँ भी हैं जो 5–6 वर्ष की आयु के बच्चों या प्राथमिक विद्यालयों में प्रवेश करने वाले बच्चों के साथ आयोजित की जाती हैं।

बच्चों को विद्यालय हेतु तैयार करने में भाषा का महत्व:

भाषा बच्चों द्वारा संवाद करने, भावनाओं और विचारों को अभिव्यक्त करने का एक माध्यम है। यह उनमें सोचने, समझने, समस्या का समाधान करने और रिश्ते को बनाए रखने में भी मदद करता है। भाषा को समझना, उसका उपयोग करना साक्षरता की ओर पहला कदम है और इसी आधार पर बच्चा पढना और लिखना सीखता है।

प्रारंभिक भाषा हेतु गातिविधियाँ:

प्रारंभिक पठन और लेखन से तात्पर्य एक बच्चे का प्रारम्भिक वर्षों के दौरान विकसित ज्ञान, कौशल और प्रवृति से है जो आगे चलकर पारंपरिक पठन और लेखन की नींव रखता है। विद्यालय हेतु तैयारी कार्यक्रम में भाषा शिक्षण के निम्नलिखित घटक होने चाहिए:

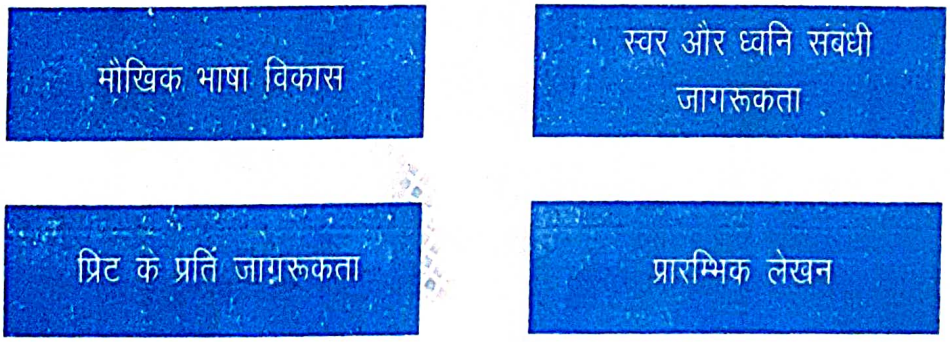

काड नं०–91 जनरल ऑफसेट प्रिंटिंग प्रेस प्रा०लि०, प्रयागराज, वर्ष 2021–22 हेतु

मौखिक भाषा विकास

मौखिक भाषा विकास से तात्पर्य बोलने और सुनने से है। प्रारंभिक वर्षों के दौरान मजबूत मौखिक भाषा कौशल बाद में पढ़ने तथा विशेष रूप से पढ़कर समझ बनाने की उपलब्धियों के लिए नींव तैयार करता है। इसके अलावा मौखिक भाषा विकास गतिविधियाँ शब्दावली के विकास में भी मदद करती हैं और यह शब्दावली ज्ञान बच्चों के पढ़ने की दक्षता को बढ़ाता है। मौखिक भाषा विकास की कुछ महत्वपूर्ण गतिविधियाँ हैं – बातचीत, कहानी सुनाना, प्रिन्ट के प्रति जागरूकता विकसित करना, ध्वनि जागरूकता आदि।

वार्तालाप

बच्चों को बात करने, अपने विचारों और कल्पनाओं को साझा करने में मज़ा आता है। यह बातचीत किसी भी चीज पर हो सकती है – एक बच्चे ने घर पर क्या किया, या विद्यालय आते समय रास्ते में उसने क्या देखा या कोई भी दिलचस्प कहानी जिसे वह साझा करना चाहे जैसे– उनके मामा/मामी मिलने आए थे और एक खिलौना कार लाये थे, या उसके चाचा की शादी थी, या उनकी गाय को बछड़ा हुआ, आदि। वार्तालाप/बातचीत थीम या विषय आधारित भी हो सकती है जैसे– पौधे, जानवर, यातायात के साधन, त्यौहार आदि। बच्चों द्वारा अपने पसंदीदा फल के विषय में बात करते समय शिक्षक को उन्हें अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को साझा करने, बिना किसी झिझक या भय के बोलने तथा दूसरों की बातों को ध्यान से सुनने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इसी प्रकार समझ और अभिव्यक्ति साथ–साथ चलती है। किसी विषय पर बातचीत के माध्यम से वे बेहतर बोलना सीखते हैं, यानी बच्चों को यह समझना होगा कि उन्हें क्या कहा जा रहा है, और फिर उसके अनुसार ही अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करनी होगी। चित्रों का इस्तेमाल करते हुए भी हम बच्चों को बातचीत में शामिल कर सकते हैं। योजना अनुसार किसी बातचीत में भाग लेने से बच्चे विभिन्न प्रकार के शब्दों और वाक्यांशों का उपयोग करना सीखते हैं, इससे उन्हें अपनी शब्दावली विकसित करने में मदद मिलती है। बातचीत में प्रतिभाग करते–करते बच्चे सरल शब्दो/वाक्यों के प्रयोग से आगे बढ़ते हुए अधिक विस्तृत जानकारी देने लगते हैं। उदाहरण के लिए, "बिल्ली" से "बड़ी बिल्ली", फिर "मुझे बड़ी बिल्ली पसंद है" तथा "बड़ी बिल्ली चूहे के तरफ भागी और उसको पकड़ लिया", आदि। बातचीत, बच्चों को किसी भी भूमिका या स्थितियों के बारे में अपने विचार या अनुभव साझा करने का अवसर प्रदान करता है तथा भाषा विकास को सरल बनाता है। इस प्रक्रिया में वे नए शब्द, उनके अर्थ और उनका उपयोग करना सीखते हैं।

कहानी वाचन

सप्ताह में कम से कम 3 से 4 कहानी सुनाई जानी चाहिए। शिक्षकों के पास अच्छी कहानियों का भंडार होना चाहिए। कभी कभी शिक्षक को बच्चों के साथ मिलकर नई कहानियाँ बनानी चाहिए। कहानी वाचन के निम्नलिखित तरीके हैं जिससे कहानी को रोचक बनाया जा सकता है:

- चित्र वाली किताब का इस्तेमाल करके
- किसी चित्र/कहानी कार्ड का इस्तेमाल करके
- कठपुतली का इस्तेमाल करके (उंगलियों वाली कठपुतली, छड़ी वाली कठपुतली, मोज़े से बनी कठपुतली, हाथ के दस्ताने से बनी कठपुतली)
- कुछ खिलौनों का उपयोग करते हुए
- बिनी किसी वस्तु का उपयोग करते हुए रोचक ढंग से मौखिक कहानी सुना कर
- कहानियों का विषय/थीम बच्चों के सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ के अनुरूप और प्रासंगिक होना चाहिए
- कहानी वाचन शारीरिक हाव–भाव, चेहरे के भाव और आवाज के उतार–चढ़ाव के साथ किया जाना चाहिए।

प्रिंट मुद्रित वस्तुओं के प्रति जागरूकता

प्रिंट के प्रति जागरूकता से तात्पर्य बच्चों में इसके प्रति जागरूकता विकसित करने से है जैसे– किस प्रकार की प्रिंट सामग्री होती हैं और इसे किस प्रकार पठन और लेखन में प्रयोग किया जाता है। बच्चे पर्चा (लेबल), चिन्ह (लोगो), चित्र (पिक्चर), विज्ञापन (पोस्टर्स) आदि के रूप में प्रिंट (मुद्रित) देखते हैं।

बच्चों में प्रिंट के प्रति जागरूकता पैदा करने हेतु निम्नलिखित बिंदु महत्वपूर्ण हैं:

सप्ताह में कम से कम 3 से 4 कहानी सुनाई जानी चाहिए। शिक्षकों के पास अच्छी कहानियों का भंडार होना चाहिए। कभी कभी शिक्षक को बच्चों के साथ मिलकर नई कहानियाँ बनानी चाहिए। कहानी वाचन के निम्नलिखित तरीके हैं जिससे कहानी को रोचक बनाया जा सकता है:

- चित्र और लेखन के बीच अंतर।
- शब्दों, वाक्यों, वाक्य की शुरुआत और अंत आदि में शब्दों की स्थिति।
- विषय वस्तु की स्थिति (मुद्रित सामग्री को सही तरीके से पकड़ना)।
- विषय वस्तु की दिशा (उदाहरण, अंग्रेजी भाषा के लिए ऊपर से नीचे तथा दायें से बाएं की ओर)।

ध्वनि जागरूकता

सप्ताह में कम से कम 3 से 4 कहानी सुनाई जानी चाहिए। शिक्षकों के पास अच्छी कहानियों का भंडार होना चाहिए। कभी कभी शिक्षक को बच्चों के साथ मिलकर नई कहानियाँ बनानी चाहिए। कहानी वाचन के निम्नलिखित तरीके हैं जिससे कहानी को रोचक बनाया जा सकता है:

ध्वनि जागरूकता से तात्पर्य उन ध्वनियों को पहचानना और उनको कुशलतापूर्वक प्रयोग करना है जो शब्दों को बनाती हैं।

- ध्वनि जागरूकता के उप–कौशल में से एक है स्वनिमिक (फोनेमिक) जागरूकता, जो शब्दों में ध्वनि की सबसे छोटी इकाई को बताती है। उदाहरण के लिए–क से 'कलम'
- तीन से छह वर्ष के बच्चे शुरू में शब्द की पहली ध्वनि पहचान सकते हैं (उदाहरण के लिए, उनके नाम की पहली ध्वनि), इसके बाद अंतिम ध्वनि और फिर धीरे धीरे वह बीच की ध्वनि को पहचानने लगते हैं।

किताबों की विषय-वस्तु को तेज आवाज़ में पढ़ना

एक पूर्व प्राथमिक कक्षा में कहानी की आकर्षक तथा रंगीन किताबें उपलब्ध होनी चाहिए। कहानी की किताब का उपयोग करते हुए कहानी तेज आवाज़ में पढने से पहले आँगनवाड़ी कार्यकत्री द्वारा बच्चों को उस कहानी से संबंधित कुछ चर्चा करनी चाहिए– अगर हाथी की कहानी है तो उसके इर्द–गिर्द चर्चा करनी चाहिए जिससे बच्चे उस विषय के साथ अपना व्यक्तिगत संबंध बनाने की कोशिश करेगें कहानी को तेज आवाज़ में पढ़ते समय किताबों को इस तरह से पकड़ना है कि बच्चे पन्ने को देख सके। कहानी पढ़ते समय आँगनवाड़ी कार्यकत्री को अपनी उँगलियों को उन शब्दों पर रखना है जो वह पढ़ रही है। इससे बच्चों को लिखित और बोले गए शब्द के बीच संबंध को समझने में मदद मिलेगी। उन्हें यह भी समझ आएगा कि लिखित शब्द कुछ कह रहा है और उनका एक अर्थ है।

लेखन की तैयारी

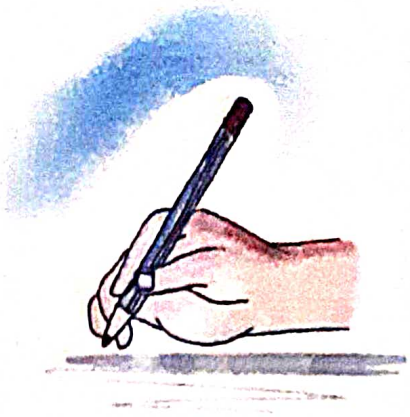

लेखन की तैयारी से हम यह समझते हैं कि बच्चे लेखन के उद्देश्य और उसके स्वरुप से अवगत हैं, जैसे–लेखन बोलने के समान है, क्योंकि हम लेखन के माध्यम से ही अपने विचारों और कल्पनाओं को अभिव्यक्त करते हैं। बच्चों के लिए भाषा और लेखन के बीच संबंध को समझना महत्वपूर्ण है यानी जो हम कहते हैं, हम उसको लिख भी सकते हैं। उदाहरण के लिए, जब हम कहते हैं कि मुझे आम पसंद हैं तो हम इन शब्दों को लिख भी सकते हैं और दिखा भी सकते हैं कि इन दोनों का एक ही अर्थ है। प्रारंभ में बच्चे चित्रकारी या रंग के माध्यम से किसी कागज़ पर घिसते हुए (स्क्रैबलिंग) या आड़ी तिरछी लकीरों को खींचते हुए खुद को अभिव्यक्त करना शुरू करते हैं। इन आड़ी तिरछी लकीरों (स्क्रैबलिंग) में उनके विचार होते हैं। इसलिए एक शिक्षक के लिए यह हमेशा महत्वपूर्ण होता है कि वह बच्चों द्वारा बनाए गए चित्रों के बारे बात करें या उनसे पूछें कि उन्होंने क्या बनाया है। जब वे यह कहते हैं कि "एक बिल्ली एक चूहे का पीछा कर रही है", तो शिक्षक को चाहिए कि बच्चों द्वारा बोले गए शब्द या वाक्य को उनके द्वारा बनाए गए उस चित्र के नीचे लिख दे। इससे उन्हें भाषा और लेखन के बीच संबंध को समझने में मदद मिलेगी, और वह चित्रों व लेखन के बीच अंतर व संबंध को समझ पायेगा। नाम के लेबल वाली गतिविधि भी लेखन शैली का एक अच्छा उदाहरण है। अपने खुद के नाम और अपने दोस्तों के नाम को पढ़ने से वे अक्षरों की आकृति से परिचित हो जाते हैं, और वे धीरे–धीरे उनकी नकल करना शुरू कर देते हैं।

बच्चों की लेखन प्रक्रिया निम्नलिखित चरणों से गुजरती है:

- अनियमित तरीके से किसी कागज़ पर घिसना (स्क्रैबलिंग), तिरछी लकीरें खींचना, चित्रकारी करना आदि
- अक्षर की तरह की आकृति/आकार दिखना
- अक्षर
- खाली स्थान के साथ अक्षर
- परम्परागत ढंग से लिखना

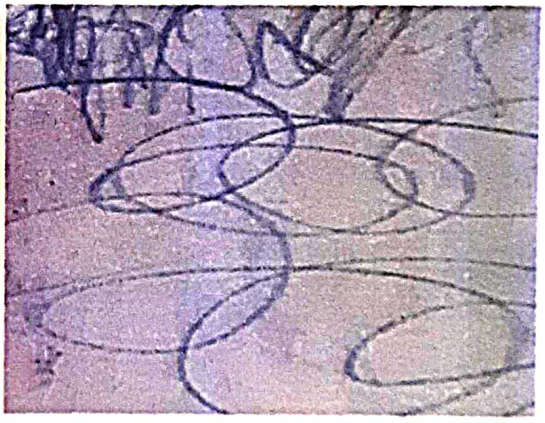

बच्चों की उंगलियों को लेखन कार्य हेतु तैयार होने से पहले ही उनका हाथ पकड़कर अक्षर लेखन के लिए बाध्य नहीं किया जाना चाहिए। किसी भी लेखन सामग्री का उपयोग करने से पहले बच्चों को छोटी मांसपेशियों के विकास और आँख व हाथ का समन्वय स्थापित करने से संबंधित गतिविधियों में शामिल करना चाहिए जिससे उन्हें अंगुलियों के बीच किसी वस्तु को पकड़ने और हाथों को घुमाने में ताकत मिल पाए जैसे– धागे में मोती पिरोना, किसी के साथ खेलना आदि। शुरुआत में बच्चों को घिसने (स्क्रैबलिंग) के लिए पेंसिल की जगह थोड़े मोटे वाले मोम रंग (क्रेयान्स), ब्रश, मार्कर, चॉक आदि दी जानी चाहिए। बिन्दुदार रूपरेखा वाली चित्रों में बीजों को रखना, रेत जब बच्चे 5 से 6 साल की उम्र में हों तो उनके साथ बिन्दुओं को जोड़ने जैसी गतिविधियाँ करवानी चाहिए जिससे उनकी अंगुलियों को तैयार होने और छोटी मांसपेशियों को नियंत्रित करने में मदद मिलती है।

बच्चों को विद्यालय के लिए तैयार करने में प्रारंभिक (शुरुआती) गणितीय गतिविधियों का महत्त्व:

बच्चे गणितीय शिक्षा की एक व्यापक पृष्ठभूमि के साथ विद्यालय आते हैं। वे अपने दैनिक जीवन में प्रयोग में आने वाली संख्याओं से परिचित होते हैं जैसे कि घड़ी से, कैलेंडर से, टेलीफोन से, घर के पते से, बस की संख्या से और इसी तरह अन्य चीजों से भी, यद्यपि बच्चों को गणितीय संक्रियाओं का लगभग कोई अनुभव नहीं होता है। इसके लिए शिक्षक को मूर्त वस्तुओं, वस्तुओं के चित्रों, ज्यामितीय आकृतियों के चित्रों आदि के साथ संख्या पर कार्य करने हेतु योजना बनानी होगी। इसी तरह बच्चों को मिलान करने, पहचान करने, नाम बताने, वर्गीकरण, छँटाई, गिनती, क्रमानुसार चीजों को लगाने, समस्या का हल करने, पहेली को पूरा करने और इसी तरह की अन्य गतिविधियों के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

गणित के प्रति बच्चों की जिज्ञासा और उनकी रुचि को विकसित करने और संज्ञानात्मक कौशल को सुदृढ़ करने के लिए प्रारंभिक स्तर की संख्यात्मक गतिविधियाँ की जानी चाहिए तथा बच्चों को दैनिक जीवन की गतिविधियों के साथ गणितीय अवधारणाओं के संबंध को समझने में मदद की जानी चाहिए, जैसे: उनके घर में कितने लोग हैं, हम अपने दाँत को कितनी बार ब्रश करते हैं, हम एक दिन में कितनी बार खाते हैं, आदि।

धीरे–धीरे, पूर्व गणितीय कौशल और अवधारणाओं की समझ के साथ बच्चे संख्याओं के साथ कार्य आसानी से कर सकते हैं। संख्या पर कार्य बच्चों में जिज्ञासा और रुचि को विकसित करने, दैनिक जीवन में स्वाभाविक रूप से गणितीय संज्ञानात्मक कौशल की समझ को मजबूत करने और कौशल को अर्जित करने में मदद करता है। इसमें लंबे समय तक अवलोकन, मिलान, पहचान, पूछताछ, जिज्ञासा, प्रयोग, खोज आदि के माध्यम से संवेदी विकास (दृश्य, ध्वनि, स्पर्श, गंध, स्वाद) की प्रक्रिया को समझते हुए पर्यावरण (भौतिक, प्राकृतिक, सामाजिक) के बारे में अवलोकन करने और बातचीत करते हुए बच्चों में जिज्ञासा, पूछताछ और प्रयोग करने संबंधी कौशल को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

विद्यालय जाने से पूर्व के चरण में संज्ञानात्मक विकास के प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान देने की आवश्यकता है जो निम्नलिखित हैं:

1. **संख्या पूर्व कौशल और धारणाएं:** याद रखना, तुलना करना, मिलान करना, छांटना, वर्गीकरण, क्रमबद्ध सोच, पैटर्न बनाना या उसको पूरा करना, समस्या का निदान करना, संबंध जोड़ना, किसी अवधारणा की रचना करना, और गणितीय शब्दावली का उपयोग करना (एक या एक से ज्यादा चीजों की विशेषता जैसे –स्थानिक संबंध, माप, ताप, आकार, समय, तापमान, क्रमबद्ध रूप से आदि)।

2. **संख्यात्मक कौशल व धारणाएं:** एक से एक समतुल्यता (संख्या अनुसार उतनी ही वस्तुओं का मिलान), वस्तुओं के साथ गिनती, संख्या अनुसार क्रमबद्ध तरीके से लगाना, दो, तीन और पाँच वस्तुओं का समूह बनाना, संख्या के प्रतीक को पहचानना, संख्या के प्रतीक को लिख पाना, वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में वस्तुओं के साथ सरल जोड़ और घटाना कर पाना, आदि।

बच्चों की उँगलियों को लेखन कार्य हेतु तैयार होने से पहले ही उनका हाथ पकड़कर अक्षर लेखन के लिए बाध्य नहीं किया जाना चाहिए। किसी भी लेखन सामग्री का उपयोग करने से पहले बच्चों को छोटी मांसपेशियों के विकास और आँख व हाथ का समन्वय स्थापित करने से संबंधित गतिविधियों में शामिल करना चाहिए जिससे उन्हें अंगुलियों के बीच किसी वस्तु को पकड़ने और हाथों को घुमाने में ताकत मिल पाए जैसे– धागे में मोती पिरोना, किसी बिन्दुदार रूपरेखा वाली चित्रों में बीजों को रखना, रेत के साथ खेलना आदि। शुरुआत में बच्चों को घिसने (स्क्रैबलिंग) के लिए पेंसिल की जगह थोड़े मोटे वाले मोम रंग (क्रेयान्स), ब्रश, मार्कर, चॉक आदि दी जानी चाहिए। जब बच्चे 5 से 6 साल की उम्र में हों तो उनके साथ बिन्दुओं को जोड़ने जैसी गतिविधियाँ करवानी चाहिए जिससे उनकी अंगुलियों को तैयार होने और छोटी मांसपेशियों को नियंत्रित करने में मदद मिलती है।

कुछ प्रारंभिक (शुरूआती) गणितीय गतिविधियाँ

गिनती

गिनती वस्तुओं की वास्तविक संख्या का पता लगाने के लिए है,जैसे–कितनी पेंसिल हैं, कितनी रबर हैं, कितने लड़के हैं, कितनी लड़कियाँ हैं, आदि। गिनती का अर्थ संख्याओं को क्रमबद्ध करना भी है– 1 के बाद 2 है, और 2 के बाद 3 है, आदि। छोटे बच्चे अक्सर गिनती करते हुए संख्या छोड़ देते हैं या क्रम बदल देते हैं। उन्हें क्रम अनुसार वस्तुओं की गिनती करने के लिए पर्याप्त मौके दिए जाने चाहिए। जब कोई बच्चा गिनती करना सीखता है, तो वह मात्रा, नाम और प्रतीक के बीच संबंध बनाता है और वह संबंध मात्रा को अभिव्यक्त करता है। क्रम अनुसार संख्या का नाम जानने में भी गिनती उन्हें मदद करती है। हाथ और पैर की उंगली का खेल संख्याओं के अनुक्रम को याद रखने की क्षमता को सुदृढ़ करता है। बटन, कंकड़, मोती, पत्तियों जैसी ठोस वस्तुओं को एक सतह पर रखकर उनके नामों के साथ गिनती करते हुए बच्चों को दिखाया जा सकता है। गिनती से संबंधित किसी कविता को भी हाव–भाव के साथ बच्चों को सिखाया जा सकता है जिसमें बच्चे काफी आनंद लेते हैं।

आकृति/ पैटर्न बनाना

पैटर्न बनाना एक महत्वपूर्ण गतिविधि है। तार्किक तरीके से कुछ चीजों का दोहराव ही पैटर्न है। पैटर्न को पहचान कर बच्चे अनुमान लगा सकते हैं– इसके बाद क्या आएगा? बच्चे समानता या अंतर को देखकर पैटर्न का पता लगते हैं। पैटर्न बनाना एक महत्वपूर्ण प्रारम्भिक गणितीय कौशल है। बच्चे किसी भी वस्तु के साथ आकृति/पैटर्न को बना सकते हैं जैसे– मोती, पत्थर, कंचे, पत्तियाँ, फूल, लकड़ियाँ आदि। शरीर की गति (बॉडी मूवमेंट) के साथ भी पैटर्न बनाया जा सकता है जैसे– चुटकी–ताली आदि।

माप की अवधारणा

बच्चों में विभिन्न आकार व वजन आदि की तुलना करके माप की अवधारणा विकसित होती है. जैसे–कौन सी गुड़िया बड़ी है, कौन सी लम्बी है, कौन से ब्लॉक (लकड़ी के गुटके) भारी हैं, आदि। जब वह एक बार यह सीख जाते हैं कि गिनती कैसे करनी है, उसके बाद उन्हें गैर–मानक माप हेतु उपकरण जैसे हाथ, अंगुलियाँ, कोहनी, पैर, पेंसिल, छड़ी, आदि का उपयोग करते हुए वस्तुओं को मापने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

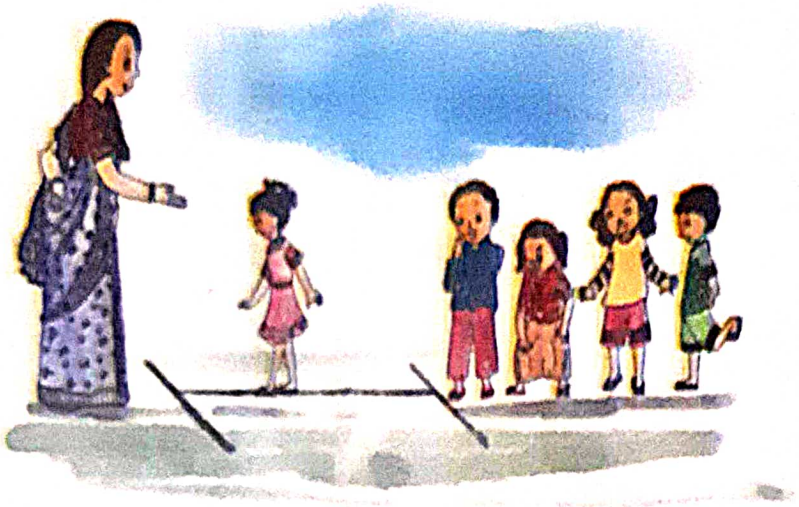

पूरा और आधा की अवधारणा (पज़ल/पहेली)

पहेलियाँ यह दर्शाती हैं कि कैसे एक पूरी वस्तु को विभिन्न भागों में विभाजित किया जा सकता है, और जब इन भागों को एक साथ रखा जाता है, तो हमें पूरी वस्तु मिल जाती है। उदाहरण के लिए– किसी नाव की तस्वीर को 4 भागों में काट दिया जाता है, या फूलों को भी विभिन्न भागों में काटा जा सकता है। इस अवधारणा को एक अन्य तरीके से बताने के लिए कहानी सुनाई जा सकती है, जैसे– मेरे पास एक लड्डू है, और मैं इसे 4 बच्चों को देना चाहती हूँ। इसलिए मैं इस लड्डू को 4 भागों में तोड़ती हूँ।

आंकड़ों का रख-रखाव

एक दिलचस्प गतिविधि के माध्यम से बच्चों को आंकड़ों का रख रखाव सिखाया जा सकता है। शिक्षक बच्चों से उनके पसंदीदा फल के बारे में पूछें। जितने बच्चे आम कहते हैं उनको एक पंक्ति में रखें। वहीं जो बच्चे अमरुद कहते हैं उनको अगली पंक्ति में और जो बच्चे केला कहते हैं उनको एक और अलग पंक्ति में रखें। इसके उपरान्त शिक्षक बोर्ड पर एक ग्राफ खींच सकते हैं और कह सकते हैं– "देखिए हमने आपके पसंदीदा फलों के साथ एक ग्राफ बनाया है"।

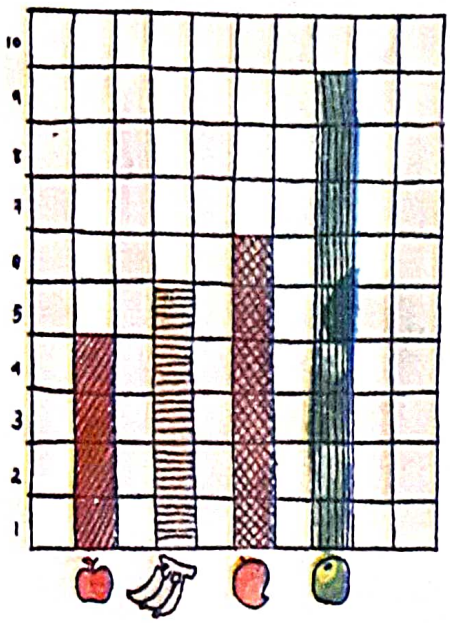

वैज्ञानिक चिंतन व जिज्ञासा विकसित करने हेतु गतिविधियाँ

सरल गतिविधियाँ और प्रयोग, जो बच्चों को विभिन्न वस्तुओं के विभिन्न गुणों को सीखने में मदद करते हैं, उन्हें आसानी से आस–पास उपलब्ध संसाधनों के साथ कक्ष में व्यवस्थित किया जा सकता है। ये गतिविधियाँ इस प्रकार से हो सकती हैं:

- डूबना और तैरना
- पत्तियों का वर्गीकरण
- पानी में क्या घुलता है / क्या नहीं घुलता है
- पानी में रंग मिलाना
- गर्म होने वाले धातु और अधातु
- चुम्बक (मैग्नेट) के साथ गतिविधियाँ

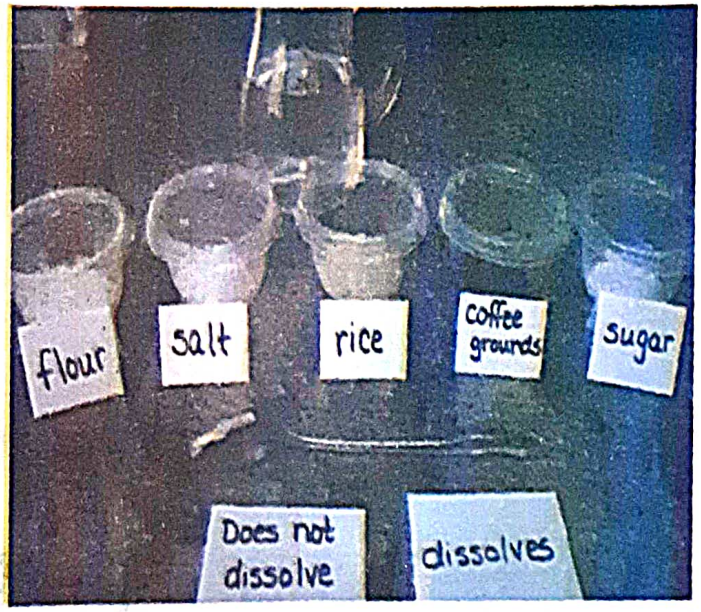

कोड नं०–91 जनरल ऑफसेट प्रिंटिंग प्रेस प्रा०लि०, प्रयागराज, वर्ष 2021–22 हेतु

गतिविधि कोना की स्थापना – यदि स्थान और धन की उपलब्धता हो, तो कक्षा में गतिविधि कोना को स्थापित किया जा सकता है, जैसे संख्या कार्य के लिए गतिविधि कोना बनाना। इस कोने में रखी जाने वाली सामग्री जो आसानी से उपलब्ध हो उसकी सूची नीचे दी गयी है:

- विभिन्न आकार और आकृति के ब्लॉक्स – लकड़ी या प्लास्टिक के
- पहेली या पजल (2, 4, 6 और 8 हिस्से वाला)
- तराजू (संतुलित करने के लिए)
- वजन करने के लिए सामग्री
- ठोस और सपाट आकार का नमूना
- संख्या रेखा
- संख्या कार्ड और काउंटर
- आकृति कार्ड्स
- चिकनी मिट्टी
- मार्बल
- छांटने वाली ट्रे
- डाइस
- गणित का खेल उदाहरण: साँप और सीढ़ी
- संख्या बोर्ड और चार्ट्स
- प्लास्टिक के क्यूब जिसे जोड़ा जा सके
- छांटने की गतिविधि के लिए छोटे छोटे डब्बे में रखे बीज– राजमा, चना, उरद, दाल
- कैलेन्डर
- घुंबक
- कपड़े के टुकड़े
- मापन टेप
- लिखने की सामग्री– स्लेट, चॉक, पेपर, क्रेयांस, रंग
- रंगीन फोम के टुकड़े (पैटर्न बनाने, गिनने आदि के लिए रंगोमेट्री)
- विभिन्न आकारों में फोम के टुकड़े, जैसे– 5 प्रकार के वृत– काफी छोटा, छोटा, माध्यम, थोड़ा बड़ा, काफी बड़ा। इसी प्रकार त्रिकोण, आयत, वर्ग आदि की 5–5 आकृतियाँ)
- पैटर्न बनाने के लिये आइस क्रीम स्टिक्स
- डोमिनो कार्ड्स
- गेम बोर्ड– रंगीन बॉक्स व डाइस के साथ
- बुलेटिन बोर्डस
- पोस्टर्स
- व्यापार खेल– नकली नोट्स, सिक्के आदि के साथ व्यापार वाले खेल

विद्यालयी तैयारी हेतु कक्षाओं के लिए योजना तैयार करना

कक्षा के लिए दैनिक योजना को इस तरह से तैयार करने की आवश्यकता होगी कि विकास के प्रत्येक क्षेत्र अनुसार गतिविधियों के लिए समय दिया जाए। बच्चों की क्षमता, उनकी जरूरत और रुचि अनुसार शिक्षक को लचीला (नरम) होना भी आवश्यक है। इसके अलावा, दैनिक योजना में निम्नलिखित चीज़ें होनी चाहिए:

- सक्रिय और शांत, दोनों प्रकार की गतिविधियों का संतुलन बनाना।
- दैनिक योजना में व्यक्तिगत, छोटे समूहों और पूरी कक्षा के लिए गतिविधि बनाना।
- समूह के लिए निर्देश और उनसे बातचीत।
- दैनिक योजना में दोनों प्रकार की गतिविधियों – कक्ष के अन्दर (इनडोर) और कक्ष के बाहर (आउटडोर) को शामिल करना।
- बच्चों द्वारा शुरू की जाने वाला गतिविधि या शिक्षक द्वारा निर्देशित गतिविधि, दोनों का संतुलन होना।
- दैनिक योजना की गतिविधियों की रचना और लचीलापन में समन्वय रखना।

साप्ताहिक दिनचर्या का नमूना

<table>
<tr><td>सत्र का नाम</td><td>सोमवार</td><td>मंगलवार</td><td>बुधवार</td><td>बृहस्पतिवार</td><td>शुक्रवार</td></tr>
<tr><td rowspan="2">स्वागत/सर्कल टाइम
(बड़े समूह में शिक्षक द्वारा पहल करना)
30 मिनट</td><td colspan="5">० बच्चों का स्वागत, ० वार्म अप ० स्वास्थ्य व सफाई की जाँच, ० स्वतंत्र वार्तालाप, ० केलेंडर की गतिविधि</td></tr>
<tr><td>एक अनुकूल दिनचर्या, आत्म–. नियमन</td><td>एक अनुकूल दिनचर्या, आत्म–. नियमन</td><td>खेल में सहभागिता (स्वतंत्र रूप से अंदर खेले जाने वाले खेल)</td><td>खेल में सहभागि. ता (स्वतंत्र रूप से अंदर खेले जाने वाले खेल)</td><td>आत्म–. नियमन</td></tr>
<tr><td rowspan="2">स्वतंत्र खेल (छोटे समूहों में बच्चों द्वारा पहल करना)
30 मिनट</td><td>खेल में सहभागिता (अंदर खेले जाने वाले खेल)</td><td>खेल में सहभागिता (अंदर खेले जाने वाले खेल)</td><td>स्वतंत्र खेल (अंदर खेले जाने वाले खेल)</td><td>स्वतंत्र खेल (अंदर खेले जाने वाले खेल)</td><td>स्वतंत्र खेल (अंदर खेले जाने वाले खेल)</td></tr>
<tr><td colspan="5">» शिक्षक को चाहिए कि वह प्रतिदिन बच्चों को कक्षा के अंदर या उनके रूचि अनुसार गतिविधि के क्षेत्रों में मुफ्त खेलने का अवसर प्रदान करें।
» बच्चों को अपने रूचि अनुसार मनपसंद खेल गतिविधि चुनने की अनुमति दी जानी चाहिए।
» खेल या कोई अन्य सामग्री को उससे संबंधित रैक या अलमारियों पर वापस रखने की आदत बच्चों में विकसित की जानी चाहिए।
» शिक्षक को लगातार अवलोकन और रिकॉर्ड करना चाहिए कि बच्चे कैसे, सामग्रियों का उपयोग करते हुए खेल रहे हैं और गतिविधियों के दौरान उसमें भाग ले रहे हैं।</td></tr>
<tr><td rowspan="2">संख्या, पर्यावरण जागरूकता एवं वैज्ञानिक सोच
(शिक्षक द्वारा पहल करना)
30–35 मिनट</td><td>दृष्टि का बोध</td><td>ध्वनि का बोध</td><td>स्पर्श का बोध</td><td>गंध का बोध</td><td>स्वाद का बोध</td></tr>
<tr><td colspan="5">शिक्षक द्वारा विकसित की गयी कोई भी वैज्ञानिक गतिविधि जैसे– डूबना और तैरना, आवर्धक लेंस का उपयोग करके प्रकृति की सैर आदि को सप्ताह में कम से कम तीन दिन आयोजित किया जाना चाहिए।</td></tr>
<tr><td>रचनात्मक व सौंदर्यात्मक विकास हेतु कला संबन्धित गतिविधियाँ /सूक्ष्म मांसपेशियों का विकास
30–35 मिनट</td><td>धागे में मोती पिरोना</td><td>स्वतंत्र रूप से चित्र बनाने का अवसर देना</td><td>आँख और हाथ के समन्वय के लिए पेपर फाड़ना और चिपकाना</td><td>छपाई (सब्जियों, ब्लॉक्स आदि के द्वारा)</td><td>मिट्टी या आंटा से मॉडल बनाना</td></tr>
</table>

दोपहर के खाने का समय (३० मिनट)

भाषा एवं साक्षरता कौशल (बड़े समूह में शिक्षक द्वारा पहल करना) 30– 35 मिनट	मौखिक	सुनने का बोध और संवादी कौशल	सुनने का बोध और संवादी कौशल	रचनात्मक आत्म अभिव्यक्ति	शब्दावली विकास और भाषा का अर्थपूर्ण उपयोग	शब्दावली विकास और भाषा का अर्थपूर्ण उपयोग
	पठन	समझ के साथ पढ़ना (तथ्यात्मक विवरण, किताबों से जुड़ाव)	ध्वनि माध्यम से जागरूकता (वाक्यों में, शब्दों की पह. चान करना)	शब्द पहचान, प्रिंट के प्रति जाग. रूकता, और अर्थ बनाना	प्रिंट के प्रति जाग. रूकता, और अर्थ बनाना	ध्वनि माध्यम से जागरूकता (वा. क्यों में ,शब्दों की पहचान करना)
	लेखन	स्वतंत्र रूप से चित्र बनाना	मॉडलिंग लेखन (बच्चों के लिए लेखन/ उद्देश्य के साथ लेखन)	किताबों से जुड़ाव	स्वतंत्र रूप से चित्र बनाना	मॉडलिंग लेखन (बच्चों के लिए लेखन/उद्देश्य के साथ लेखन)
बाहर खेले जाने वाले खेल (बड़ी मांसपेशियों का विकास) 30–35 मिनट	खेल में सहभागि. ता (बाहरी खेल)	स्वतंत्र रूप से बाहरी खेल	अलग. –अलग तरीकों से चलना (तेज, धीमा, आगे, पीछे)	तेज गति से चलना	धीमे या तेज दौड़ना	
	बच्चों को बाहरी खेल के लिए ले जाएं और उन्हें रेत तथा झूले और स्लाइड्स आदि के साथ खेलने का अवसर दें।बच्चों के लिए दौड़ने, चढ़ने, कूदने आदि गतिविधियों के बारे में भी सोचें। यदि कोई स्थान उपलब्ध न हो, तब आप घर के अंदर ही खेल खेलें और उसमें बड़ी मांसपेशियों और संगीत से संबंधित गति. विधियाँ जैसे– योग, नृत्य, गीत आदि को शामिल करें।					
गुड बाए टाइम 30 मिनट	» शिक्षक को चाहिए कि वह बच्चों को उस दिन की गई गतिविधियों को याद करने में मदद करें । » शिक्षक को बच्चों को अगले दिन की गतिविधियों के लिए तैयार करना चाहिए। » शिक्षक को चाहिए कि वह बच्चों को उस दिन करवाए गए गतिविधियों को अपने माता–. पिता के साथ साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें। » स्व–नियमन और अनुकूलन क्षमता।					

R6D7X1

2. तैयार विद्यालय:

बच्चे विविध पृष्ठभूमि तथा विविध अनुभवों के साथ विद्यालय आते हैं। वहां शिक्षक द्वारा बोली जाने वाली भाषा, बच्चों द्वारा घर पर बोली जाने वाली भाषा से भिन्न हो सकती है और निर्देश देने की भाषा राज्य की मानक भाषा हो सकती है। अगर इस सामाजिक-भाषायी विभाजन को पाटा नहीं गया तो यह बच्चों के सीखने में एक बड़ा अवरोध बन सकता है। आँगनवाड़ी से विद्यालयों में आने वाले बच्चों का आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री के साथ अनौपचारिक व मैत्रीपूर्ण संबंध हो सकता है, आँगनवाड़ी केंद्र में खिलौने और खेलने की सामग्री हो सकती है जिसे वे बिना किसी प्रतिबंध के उपयोग कर सकते हैं और उनसे सीख सकते हैं। उन केंद्रों में उन्हें घूमने-फिरने, खेल का चयन करने और अपने साथियों से बात करने की आजादी होती थी, लेकिन यही हो सकता है कि औपचारिक विद्यालय में इस तरह के व्यवहार स्वीकार्य न हो इसलिए विद्यालयों की जिम्मेदारी है कि वे निम्नलिखित चीजों को सुनिश्चित करें ताकि बच्चों को सतत अनुभव प्राप्त होता रहे।

विद्यालयों के शिक्षकों को विशेष रूप से बुनियादी स्तर पर छोटे बच्चों को पढ़ाने के लिए शैक्षणिक दृष्टिकोण (खुद से किसी कार्य को करते हुए सीखना, खेल-खेल में या गतिविधियों के माध्यम से सीखना) के बारे में पता होना चाहिए और इसके लिए एक उपयुक्त शिक्षण वातावरण बनाने का प्रयास करना चाहिए ताकि बच्चों को सहजता के साथ स्वयं को ढालने व कार्य करने में मदद मिल सके। उन्हें प्रथम 6 वर्षों के महत्व और एनसीईआरटी के प्री-स्कूल करीकुलम तथा FLN डाक्युमेन्ट में दिए गए बच्चों के विकास से संबंधित माइलस्टोन्स के बारे में भी जानकारी होनी चाहिए। उनसे अवास्तविक अपेक्षाएं नहीं रखनी चाहिए। उन्हें इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा क्या है (सीखने का एक गैर-औपचारिक खेल आधारित तरीका) और प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा क्या नहीं है (औपचारिक रूप से अनुशासन में रखकर शिक्षा देना)। वे यह समझें कि प्राथमिक स्तर पर पहली व दूसरी कक्षाओं में एक सीखने की एक निरंतरता होती है और सीखने के परिणाम में अंतरसम्बद्धता होती है।

तैयार विद्यालय क्या है?

- तैयार विद्यालय एक ऐसी जगह है जहाँ बच्चे सुरक्षित और संरक्षित महसूस करते हैं।
- विद्यालय बच्चों के सीखने को अनुभव आधारित और अर्थपूर्ण को बनाने का प्रयास करते हैं।
- बच्चों को विभिन्न प्रकार की गतिविधियों को करने का अवसर मिलता है जिससे उन्हें विकास के सभी क्षेत्रों में अपनी क्षमताओं को विकसित करने में मदद मिलती है।
- शिक्षक बच्चों के व्यक्तिगत विशेषताओं के प्रति संवेदनशील होते हैं और समझते हैं कि बच्चे एक दूसरे से अलग गति से सीखते हैं।
- विद्यालय बच्चों के विभिन्न संदर्भों से अवगत होते हैं और उन्हें अपने घर पर सीखे हुए अनुभवों से जोड़ने में मदद करने का प्रयास करते हैं।
- विद्यालय बच्चों में सीखने की निरंतरता को बनाए रखने और उनके द्वारा पूर्व में सीखे हुए चीजों को जोड़ने का प्रयास करते हैं।

बच्चों की मदद करने हेतु औपचारिक तौर कार्य करने के लिए विद्यालयों को निम्नलिखित पक्षों का ध्यान रखना चाहिए:

एक अनुकूल भौतिक (फिजिकल) वातावरण

बच्चों के लिए भौतिक (फिजिकल) वातावरण स्वागत योग्य और आकर्षक होना चाहिए। बैठने की व्यवस्था लचीली हो, अर्थात मुख्य रूप से ऐसी होनी चाहिए जहाँ बच्चे विभिन्न प्रकार की गतिविधियों जैसे- छोटे या बड़े समूहों में या व्यक्तिगत रूप से भाग ले सकें। वातावरण प्रिंट रिच होना चाहिए जहाँ कक्षा के अन्दर रखे डब्बे या वस्तुओं में लेबल लगा (नाम लिखा) होना चाहिए, कक्षा के कुछ साधारण नियमों को लिखकर लगाना चाहिए, रंगीन चार्ट को प्रदर्शित करना चाहिए आदि। बच्चों के नाम को और उनके द्वारा किए गए कला कार्यों को प्रदर्शित करने से उनमें अपनेपन की भावना पैदा होती है। बाहर खेलने के लिए जगह होनी चाहिए जो बच्चों को शारीरिक गतिविधियों में मदद करेगी, जैसे कि इधर-उधर भागना, बाहर निकलना, कूदना, चढ़ना आदि। विद्यालय सुरक्षित हो, खतरनाक वस्तुयें न हों, वरना बच्चों को चोट पहुंच सकती है।

सामाजिक तथा भावनात्मक रूप से सहयोगी वातावरण

बच्चों को एक अनुकूल वातावरण प्रदान करें जहां शिक्षक सभी बच्चों की जरूरतों के बारे में संवेदनशील हों, विशेष रूप से विशेष-आवश्यकता वाले बच्चों या सामाजिक आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों से आने वाले बच्चों के लिए। उनके साथ भेदभाव नहीं हो। शिक्षकों को प्रत्येक बच्चे की पृष्ठभूमि को सहर्ष स्वीकार करना चाहिए। यदि ऐसे घरों से बच्चे हैं, जहाँ बोली जाने वाली भाषा विद्यालय की भाषा से भिन्न है, तो शिक्षकों को बच्चे की भाषा को समझने का प्रयास करना चाहिए और बच्चों को विद्यालय की भाषा को प्रयोग करने में सक्षम बनाने में मदद करनी चाहिए। शिक्षकों को इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि बच्चे किस उम्र में क्या करने और जानने में सक्षम हैं, उनसे अवास्तविक अपेक्षाएँ नहीं होनी चाहिए। सीखना आपसी संबंध और पारस्परिक व्यवहार के संदर्भ में होता है। बातचीत को एक दोस्ताना तरीके से करना पड़ता है ताकि बच्चे बेझिझक होकर अपनी प्रतिक्रिया दें। बच्चों में सीखने को बढ़ावा देने और बेहतर संबंध स्थापित करने के लिए बच्चों और शिक्षकों के बीच सहभागिता बहुत जरूरी है।

लिंग समानता हेतु संवेदनशील

विद्यालयों को लिंग आधारित रुढ़िवादी धारणाओं को तोड़ने के लिए एक सजग प्रयास करना चाहिए क्योंकि यही वह उम्र होती है जहाँ बच्चे की प्रवृति और व्यवहार पूरे जीवन में उनके साथ रहती है। लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए विद्यालयों द्वारा निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं:

- शिक्षक सक्रिय रूप से लड़कों और लड़कियों से समान अपेक्षाओं को बढ़ावा दें।
- लड़कों और लड़कियों पर समान ध्यान और अवसर दिए जाएँ।
- जिन कहानियों, पुस्तकों और गतिविधियों का चयन किया जाये, वे लिंग आधारित पक्षपात से मुक्त हों।
- शिक्षकों को सचेत रूप से पुरुषों और महिलाओं के लिए रूढ़िवादी भूमिकाओं को बढ़ावा देने से बचना चाहिए।
- शिक्षकों को लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और लिंग आधारित भेदभाव जैसी प्रथाओं को रोकने के लिए माता-पिता को संवेदनशील बनाना चाहिए।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की जरूरतों के प्रति संवेदनशील

विद्यालय सक्रिय रूप से समावेशन को बढ़ावा देते हैं और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के सामाजिक समावेशन में मदद भी करते हैं और ऐसे बच्चों की सीखने की क्षमता के अनुरूप गतिविधियों में बदलाव करते हैं। लेकिन इसके लिए उन्हें प्रारंभ में ही पहचान करने के लिये उचित कदम उठाने जरूरी हैं। शिक्षकों को विकास संबंधी माइलस्टोन्स की उचित जानकारी होनी चाहिए और उसी अनुसार योजना बनानी चाहिए और बच्चों को उचित सहायता प्रदान करनी चाहिए।

आंगनवाड़ी केंद्र से प्राथमिक विद्यालयों में सुचारु संक्रमण हेतु संयुक्त गतिविधियों को बढ़ावा देना

आँगनवाड़ी केंद्र में एक अनौपचारिक वातावरण में बच्चों की दिनचर्या होती है जो एक औपचारिक विद्यालय से काफी अलग है। इसलिए कुछ बच्चों को एक बड़े विद्यालय में जाना कठिन लग सकता है। जिन प्राथमिक विद्यालयों में आँगनवाड़ी केंद्र स्थित है, वहाँ बच्चों में प्रारंभिक अनुभव और समझ तो हो सकती है लेकिन वहाँ भी कुछ विशिष्ट गतिविधियों को तैयार करने की आवश्यकता होगी जो विशेष रूप से शिक्षकों और प्राथमिक विद्यालयों में उपस्थित बच्चों के साथ परिचित होने में मदद करेगी। नियमित रूप से आँगनवाड़ी कार्यकत्री और विद्यालय के एक नामित शिक्षक द्वारा बच्चों के साथ निरंतरता से कुछ संयुक्त गतिविधियों का संचालन करके उनमें सुरक्षा की भावना पैदा करनी होगी। इस तरह की गतिविधियाँ किसी कार्यक्रम की तरह एक बार नहीं होनी चाहिए बल्कि नियमित रूप से आयोजित की जानी चाहिए। जो आँगनवाड़ी केंद्र प्राथमिक विद्यालयों के प्रांगण में हैं उनके लिए गतिविधियों की महीने में एक बार आसानी से किया जा सकता है। वहीं जो आँगनवाड़ी केंद्र अलग जगह स्थित हैं, उनके लिए गतिविधियाँ हर तीन महीने में एक बार, तिमाही आधार पर की जा सकती हैं।

संयुक्त गतिविधियों की योजना बनाना

संयुक्त गतिविधियों के लिए विद्यालय से नामांकित शिक्षक और आँगनवाड़ी कार्यकत्री संयुक्त रूप से दिन और समय तय कर सकते हैं। उदाहरण के लिए वे यह तय कर सकते हैं कि प्रत्येक महीने के आखिरी शुक्रवार या शनिवार को लगभग ११ बजे ऐसी गतिविधियाँ होंगी। इसके लिए उन्हें एक साथ बैठना होगा और गतिविधियों की योजना बनानी होगी, तथा गतिविधियों के संचालन के लिए शिक्षण सामग्री की आवश्यकता पड़ने पर उनकी व्यवस्था भी करनी होगी। अपने विद्यालय के संबंधित हेड टीचर और पर्यवेक्षक को योजना के बारे में बताना होगा और उन्हें बदले में यह सुनिश्चित करना होगा कि वे योजना को ठीक से क्रियान्वित करें। आँगनवाड़ी केंद्र और विद्यालय के बच्चों को गतिविधियों के बारे में और उनसे उनकी भूमिका और अपेक्षाओं के बारे में भी पहले ही बताना होगा।

चयनित गतिविधियाँ ऐसी होनी चाहिए जिसमें सभी बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित हो ताकि उन्हें एक दूसरे से मिलने में मदद मिल सके और वह एक दूसरे को अच्छी तरह से जान सकें। इसके लिए अधिक संसाधनों की आवश्यकता भी नहीं होगी।

नीचे कुछ गतिविधियाँ दी जा रहीं है जिसे बच्चों के साथ किया जा सकता है:

1. टनल (सुरंग) खेल

इस खेल के लिए बच्चों के दो समूह बनाते हैं। एक समूह के द्वारा टनल (सुरंग) बनाया जाता है और दूसरा समूह सुरंग से होकर गुजरता हैं। टनल (सुरंग) बनाने के लिए दो बच्चों को अपने मुँह को एक दूसरे की तरफ करते हुए खड़ा होना पड़ता है तथा अपने दोनों हाथों को ऊपर करते हुए अपने साथी के साथ हाथ को जोड़ना पड़ता है। जब यह खेल शुरू होता है तब बंचे हाथ ऊपर की ओर होते हैं और बच्चे सीधे चलते हुए इसके नीचे से गुजरते हैं। धीरे धीरे सुरंग की उँचाई कम करने के लिए बच्चे अपने हाथों के जोड़ को नीचे करते रहते हैं। अंतिम चरण में सुरंग बनाने वाले बच्चे नीचे झुकते हुए अपने घुटनों पर बैठ जाते हैं और बच्चे इसके नीचे से जाने की कोशिश करते हैं। अंत में वह नीचे बैठते हुए सुरंग बनाते हैं और बच्चों को इसके नीचे से जाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। जैसे–जैसे सुरंग नीचे होती होती जाती है, बच्चे पहले झुकते हैं, फिर रेंगते हैं और फिर अंत में लेट जाते हैं। इस बिंदु पर पहुंचने के बाद, उनकी भूमिकाएँ बदल जाती हैं, जैसे– अब दूसरी टीम सुरंग बनायेगी।

2. ताज़ा समाचार

यह आंगनवाड़ी केंद्र की एक लोकप्रिय गतिविधि है जहाँ बच्चे अपनी बारी के अनुसार समाचार सुनाते हैं। समाचार कुछ भी हो सकता है जो उन्होंने उसी दिन या पिछले दिन अनुभव किया हो, जैसे– 'आज जब मैं विद्यालय आ रहा था मैंने एक कुत्ता देखा जो बिल्ली का पीछा कर रहा था' और 'कल मेरी मौसी हमारे घर आई थीं और उन्होंने मुझे कुछ चॉकलेट लाकर दीं। समाचारों के इस आदान–प्रदान से बच्चों को एक–दूसरे को जानने का मौका मिलता है। शिक्षकों और आँगनवाड़ी कार्यकत्रियों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चे बिना किसी हिचक के अपने विचार व्यक्त कर पाएँ।

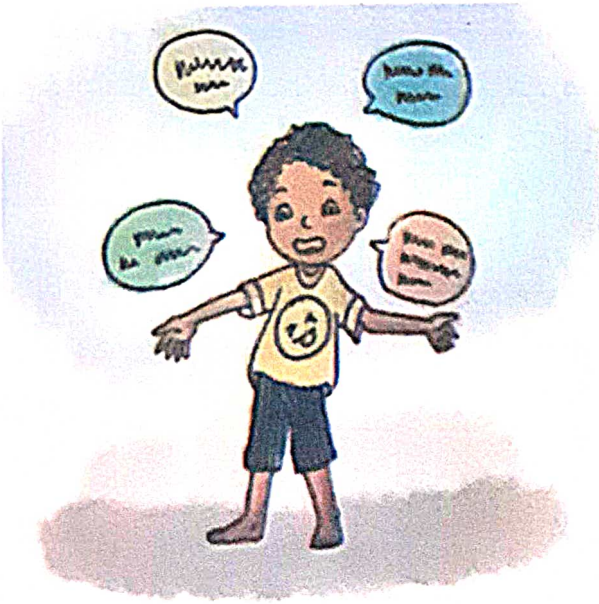

कोड नं०-91 जनरल ऑफसेट प्रिंटिंग प्रेस प्रा०लि०, प्रयागराज, वर्ष 2021–22 हेतु

3. नाम को आपस में बदलने वाली गतिविधि

यह गतिविधि बच्चों को एक दूसरे के नाम जानने में मदद करती है। बच्चे एक दूसरे की तरफ मुँह करके खड़े हो जाते हैं। एक तरफ आँगनवाड़ी केंद्र के बच्चे तो दूसरी तरफ विद्यालय के बच्चे होते हैं। शिक्षक किसी एक बच्चे को गेंद फेंककर देते हैं, बच्चे उस गेंद को पकड़ते हुए अपना नाम बताते हैं। इसके वाद वह आपस में अपना स्थान बदल लेते हैं। अब उसे गेंद को विपरीत पंक्ति में खड़े दूसरे बच्चे के पास फेंकना होगा। दूसरा बच्चा गेंद को पकड़ेगा और अपना नाम कहेगा और फिर वह अपने स्थानों का आदान प्रदान करेगा। यह खेल तब तक जारी रहेगा जब तक सभी बच्चों को अपना नाम बताने और स्थान परिवर्तन का मौका नहीं मिल जाता। खेल के अंत में दोनों समूहों की पोजीशन बदल दी जाएगी।

4. मौखिक कहानी सुनानाा

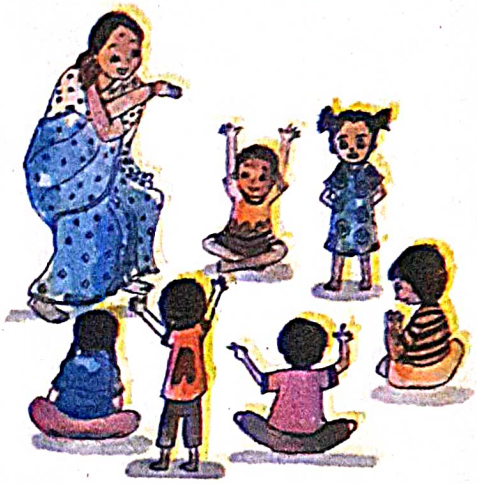

बच्चों को कहानियाँ सुनने में मजा आता है। कहानियों को सुनाते समय बहुत सारा हाव–भाव और आवाज़ में उतार चढ़ाव होना चाहिए। कहानियाँ, किसी शिक्षक, आगनवाड़ी कार्यकत्री या केन्द्र में उपस्थित किसी बड़े बच्चों द्वारा सुनायी जा सकती है। किसी कहानी को सुनाने के बाद बच्चे इस पर नाटक कर सकते हैं।

5. भावगीत

भावगीत से बच्चे की बहुत सी शारीरिक क्रियाएं होती हैं और वह इन भावों को बहुत पसंद करते हैं। आँगनवाड़ी कार्यकत्री कुछ भावगीत करवा सकती हैं जैसे– "चंदा के गाँव में, ताली बजाओ बच्चों" .....।

6. हम बाज़ार जायेंगे

इस गतिविधि के लिए बच्चों से एक गोल दायरे में खड़े होने को कहेंगे और फिर इसी गोलाई में बच्चों को घूमने कहेंगे। आँगनवाड़ी कार्यकत्री/ शिक्षक भी उनके साथ इसी गोलाई में घूमेंगे। आँगनवाड़ी कार्यकत्री/ शिक्षक कहेंगी "हम बाज़ार जायेंगे", और बच्चे इसके जवाब में कहेंगे "कितनी जलेबी लायेंगे" और फिर आंगनवाड़ी कार्यकत्री/ शिक्षक कहेंगी "4 जलेबी लायेंगे"। इसके बाद भाग रहे बच्चों को रुक जाना है और फिर जल्दी से 4–4 के समूह में खड़े हो जाना है। इसी प्रकार गतिविधि को आगे बढ़ाते हुए संख्या में बदलाव किया जाएगा– 3, 5, या 6।

7. बाल्टी / कार्टन में गेंद फेंकना

इस गतिविधि को दो टीमों के बीच एक प्रतियोगिता के रूप में आयोजित किया जा सकता है। शुरुआत में बच्चों को दो टीम में विभाजित करेंगे और फिर दोनों टीमों को दो अलग–अलग पंक्तियों में कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा करेंगे। एक बाल्टी या एक खाली कार्टन को प्रत्येक समूह के सामने लगभग 4 से 5 फीट की दूरी पर रखेंगे। प्रत्येक पंक्ति के आगे एक सीधी रेखा खींचेंगे और दोनों पंक्ति में खड़े पहले बच्चे के हाथ में गेंद देंगे। सामने खड़े बच्चे द्वारा खिंची हुई रेखा के पास से उस गेंद को बाल्टी में फेंकना है। प्रत्येक बच्चे को तीन मौके दिए जायेंगे।

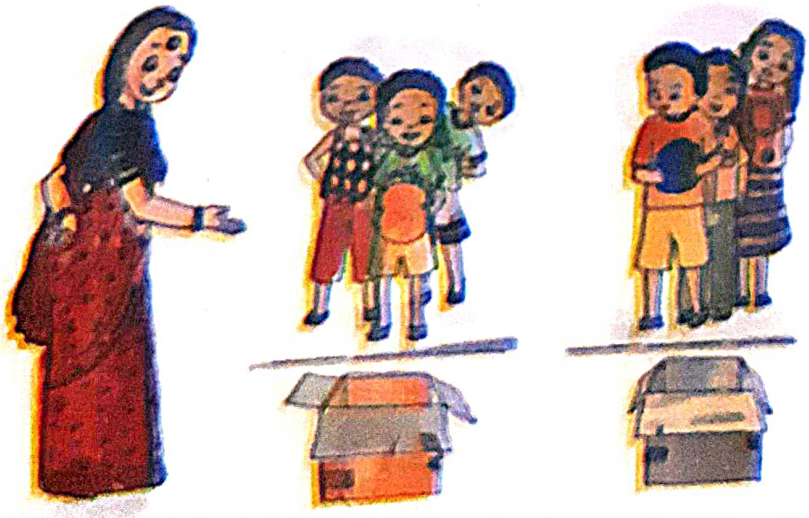

शिक्षक / आँगनवाड़ी कार्यकत्री को बच्चों द्वारा फेंके हुए गेंद की गिनती रखनी है। गेंद को सही जगह फेंकने पर प्रत्येक समूह को एक सही अंक मिलेगा। खेल के दौरान सभी बच्चों को मौका दिया जाएगा तथा जिस समूह को अधिक अंक मिलेगा वह विजयी होगा।

8. दीदी दीदी किसकी चाल?

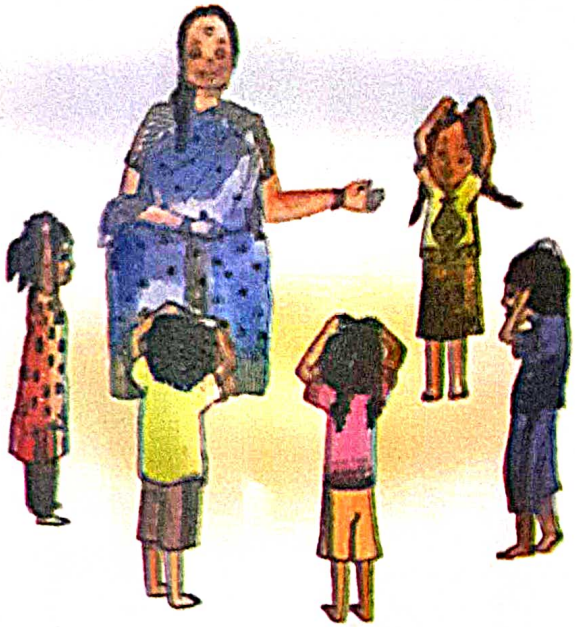

बच्चे एक छोर पर पंक्ति में खड़े होंगे और शिक्षक दूसरे छोर पर खड़े होंगे। सारे बच्चे अब एक साथ आवाज़ लगायेंगे "दीदी दीदी किसकी चाल"? उसके बाद शिक्षक / आँगनवाड़ी कार्यकत्री किसी एक जानवर का नाम लेंगी, जैसे– मेंढक, बकरी आदि। इसके उपरान्त बच्चे मेंढक जैसे कूदते हुए या बकरी जैसे चलते हुए आँगनवाड़ी कार्यकत्री की ओर आयेंगे। इसके बाद कार्यकत्री फिर दूसरे छोर पर चली जाएगी और फिर इसी गतिविधि को दोहरायेंगी, लेकिन इस दौरान वह जानवरों के नाम में बदलाव करेगी जैसे– खरगोश, बत्तख, कुत्ता, चीता आदि।

9. गेंद को एक दूसरे को पास करना – रिले रेस

इस उम्र में बच्चे चुनौतियों का सामना करते हैं और प्रतिस्पर्धी खेलों का आनंद लेते हैं। इसलिए बच्चों को दो समूहों में विभाजित कर इस खेल को एक प्रतियोगिता के रूप में आयोजित किया जा सकता है। शुरुआत में बच्चों को दो टीम में विभाजित करेंगे और फिर दोनों टीमों को दो अलग–अलग पंक्तियों में खड़ा करेंगे। दोनों पंक्ति में सामने खड़े बच्चे को हम गेंद दे देंगे। इसके उपरांत उस बच्चे को नीचे झुकते हुए गेंद को अपने घुटनों के बीच से दूसरे बच्चे को पास करना होगा। इसी प्रकार यह प्रक्रिया चलेगी और गेंद जैसे अंत में पहुंचेगी, उस बच्चे को भागते हुए आगे आना होगा और इसी प्रक्रिया को दोहराना होगा। यह प्रक्रिया तब तक चलेगी जब तक पंक्ति में खड़ा हुआ पहला बच्चा पंक्ति के अंत में ना पहुँच जाए। जो टीम इस प्रक्रिया को पहले समाप्त करेगा वह इस खेल का विजेता होगा।

10. घर–बकरी

यह एक समूह बनाने का खेल है जिसका बच्चे काफी आनंद लेते हैं। जब शिक्षक/आँगनवाड़ी कार्यकत्री बच्चों को निर्देश देते हुए कहती है "घर" उस समय दो बच्चे आमने सामने खड़े होंगे और अपने दोनों हाथों को मिलाते हुए एक झोपड़ी बनाएंगे। जब फिर शिक्षक/आँगनवाड़ी कार्यकत्री कहेंगी "घर–बकरी" उस समय 3 बच्चों को एक साथ आना है और उनमें से 2 बच्चों को झोपड़ी बनानी है तथा एक बच्चे को उसके बीच में बकरी बनकर बैठना है। इसी प्रकार यह गतिविधि तब तक चलेगी जबतक सभी बच्चों को प्रतिभाग करने का मौका नहीं मिल जाता।

कोड नं०–91 जनरल ऑफसेट प्रिंटिंग प्रेस प्रा०लि०, प्रयागराज, वर्ष 2021–22 ई०

11. मैं कौन हूँ

इस खेल के लिए शिक्षक/आँगनवाड़ी कार्यकत्री को चित्रों का एक सेट तैयार रखना होगा। ये चित्र कुछ भी हो सकते हैं – एक कार, बस, एक गाय, एक पेड़, आदि। एक बच्चा आगे आएगा और उनमें से किसी एक तस्वीर को चुनेगा और फिर वह उस चित्र को बिना किसी को दिखाए सबके सामने खड़ा हो जाएगा। अब वह अन्य बच्चों से उस चित्र के बारे में पूछेगा कि मेरे पास कौन सा चित्र है? अन्य बच्चे इसका उत्तर देंगे और सामने खड़ा बच्चा बच्चों को 'हाँ' या 'ना' में बताएगा। यह खेल तब तक चलता रहेगा जब तक बच्चों द्वारा चित्र कार्ड में बने चित्र का सही नाम नहीं बता दिया जाता। अब कोई दूसरा बच्चा कार्ड लेकर खड़ा होगा।

इस खेल को एक भिन्न प्रकार से भी खेला जा सकता है – जब बच्चा चित्र कार्ड को उठाएगा और अन्य बच्चों से कार्ड के बारे में पूछेगा, उस समय वह चित्र कार्ड में बने चित्र के बारे में थोडा संकेत (हिंट) भी दे सकता है, जैसे– इसमें 4 पहिए हैं – और फिर बच्चों को उसका अनुमान लगाना होगा।

12. टोपी – जूता – बेल्ट

यह एक मजेदार गतिविधि है और इसके लिए किसी प्रकार के संसाधन की आवश्यकता नहीं है। शिक्षक / कार्यकत्री बच्चों को एक गोल दायरे में खड़े होने के लिए कहेंगी। जब कार्यकत्री "टोपी" कहेंगी – तब सभी बच्चों को अपने सर को छूना है, जब वह "बेल्ट" कहेंगी, तब सभी बच्चों को अपने कमर को छूना है, जब वह "जूता" कहेंगी, तब सभी बच्चों को अपने पैर को छूना है। इसी प्रकार वह "टोपी, जूता, बेल्ट" दोहराती रहेंगी।

इसको वह कभी तेज तेज तो कभी धीमे धीमे बोलेंगी। साथ ही इसके क्रम "टोपी, बेल्ट, बेल्ट" में बदलाव करके वह इसको चुनौतीपूर्ण बना सकती हैं।

13. समूह में जानवर की आवाज़ निकालना

बच्चों को छोटे छोटे समूह में बैठने के लिए कहेंगे या खुद बैठा देंगे। प्रत्येक समूह को किसी एक जानवर या पक्षी का नाम दिया जाएगा–कौवा, कुत्ता, बिल्ली आदि। अब शिक्षक/ कार्यकत्री द्वारा बारी–बारी से अलग अलग समूहों से उस पक्षी या जानवर की आवाज़ निकालने के लिए कहा जाएगा। कार्यकत्री इस खेल को जल्दी जल्दी भी करवा सकती हैं। खेल में चुनौती के स्तर को बढाने के लिए, शिक्षक/ कार्यकत्री द्वारा ताली बजाया जा सकता है और उन्हें इसका एक पैटर्न दिया जा सकता है – एक ताली, दो ताली, तीन ताली। बच्चों को उस जानवर या पक्षी की आवाज़ को निकालते हुए इस पैटर्न को दोहराना होगा।

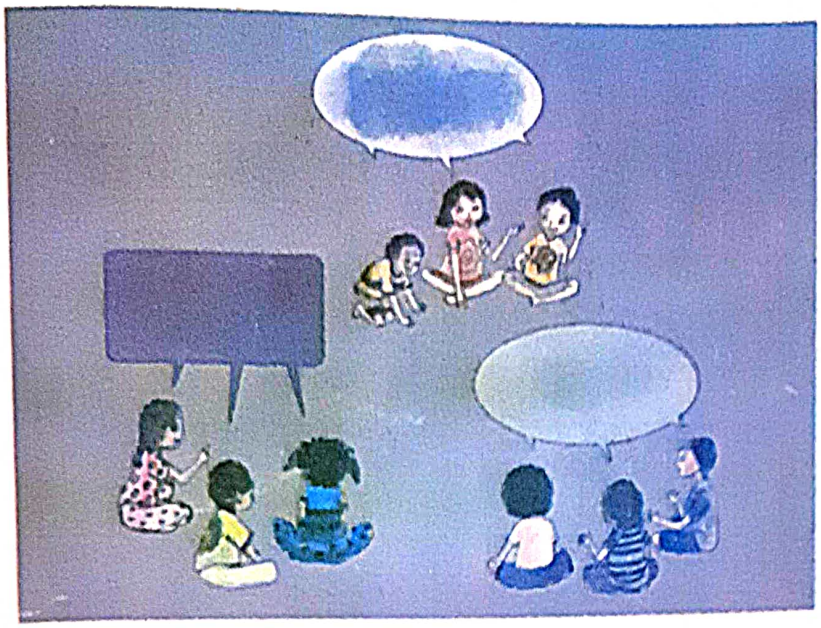

14. पर्ची का खेल

शिक्षक/कार्यकत्री छोटी–छोटी पचियों में कुछ शब्द लिखेंगे, जैसे– फल, जानवर, गाड़ी, फूल आदि। बच्चों को एक अर्ध गोले में अपने सामने बैठाया जाएगा। अब कार्यकत्री किसी एक बच्चे का नाम लेंगी। जिस बच्चे का नाम पुकारा जाएगा, उसको आगे आकर एक पर्ची उठाना होगा। फिर बच्चे से उस पर्ची को पढ़ने के लिए कहा जाएगा। यदि उसको पढ़ने में मदद की ज़रूरत होगी, तो कार्यकत्री मदद करेंगी। अगर बच्चे को पर्ची में फल लिखा हुआ मिलेगा तो उस बच्चे को एक फल का नाम बताना होगा।

15. रोल प्ले

बच्चे स्वयं छोटे छोटे समूह बना सकते हैं और कोई रोल प्ले कर सकते हैं, जैसे– डॉक्टर, शिक्षक, दुकानदार या माँ बनने का नाटक कर सकते हैं। बच्चे अपने पसंदीदा कहानी का भी मंचन कर सकते हैं।

16. किताबों से जुड़ाव

शिक्षक / आँगनवाड़ी कार्यकत्री उन पुस्तकों को प्रदर्शित कर सकती हैं जो आँगनवाड़ी केंद्र या विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं। बच्चे खुद से या दो के समूह में उन किताबों को लेकर उलट–पलट सकते हैं। इसमें बने रंगीन चित्र पुस्तकों को आकर्षक बनाती हैं तथा बच्चों में रुचि पैदा करती है। जब वे पुस्तक को उलटते–पलटते हैं और इसके अन्दर बने चित्रों को देखते हैं, तो उसके अन्दर के विषय वस्तु का अनुमान लगाने की कोशिश करते हैं। यदि बड़े बच्चे पढ़ने में सक्षम हैं, तो वह अन्य बच्चों को कहानियाँ पढ़कर सुना भी सकते हैं।

17. किसी एक अक्षर को उठाना और उस अक्षर से शुरू होने वाले शब्द बताना

शिक्षक / आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री के पास कुछ अक्षर कार्ड होते हैं जिसको लेकर वह बच्चों के साथ एक अर्ध चक्र गोले में बैठ जाते हैं। शिक्षक उसमें से एक कार्ड उठाते हैं और "पासिंग पार्सल गेम" की तरह इस कार्ड को बच्चों के बीच पास करते हैं। जब कार्ड एक–दूसरे बच्चों से गुजर रहा होगा, तो उस दौरान वह डफली बजा सकते हैं। जब डफली का बजना रुकता है, तो वह कार्ड जिस बच्चे के पास होगा, उस बच्चे को उस कार्ड में लिखे अक्षर से शुरू होने वाले शब्द को बताना होगा। उदाहरण के लिए – अगर बच्चे के पास "म" अक्षर वाला कार्ड आता है, तो वह इससे बनने वाले शब्द मछली, मटका, मटर, आदि बोल सकते हैं। इसी प्रकार खेल अन्य अक्षरों के साथ आगे बढ़ता है।

18. कला और शिल्प : मौसम और त्योहारों को मनाना।

त्योहारः दीपावली के लिए वे मिट्टी से दिये तैयार कर सकते हैं। होली के लिए वे कागज़ पर स्प्रे पेंटिंग कर सकते हैं। वे अपने आस–पास से एकत्र की गई वस्तुओं जैसे– कंकड़, टहनियाँ, पत्ते, फूल, आदि के साथ रंगोली भी कर सकते हैं।

मौसमः बरसात के लिए वे कागज़ का इस्तेमाल करते हुए नाव बना सकते हैं या चार्ट पेपर पर एक बड़ी छतरी के चित्र पर रंग कर सकते हैं। वे अपने अनुभव से बारिश के दिन की तस्वीरें भी बना सकते हैं।

19. कार्यक्रम आयोजित करना

बच्चे अपने माता पिता के लिए एक कार्यक्रम रख सकते हैं। इस कार्यक्रम में वह अपने माता–पिता को कविताएँ, कहानी, डांस, किसी कहानी का नाटक, आदि करके दिखा सकते हैं। वे कठपुतलियों के साथ भी किसी नाटक को करके दिखा सकते हैं।

तैयार माता–पिता / परिवार

जिन बच्चों को एक प्रेरक परेलू वातावरण मिलता है, वे विद्यालय में बेहतर प्रदर्शन करते हैं। इसके उपरान्त जब बच्चों के माता–पिता को उनके प्रारम्भिक वर्षों के महत्व से अवगत कराया जाता है, तो वे सही समय पर सही तरीके से मदद देने के लिए प्रतिबद्ध होते हैं। यह जागरूकता केवल माता–पिता तक ही सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि देखभाल करने वालों परिवार व समुदाय के अन्य सदस्यों तक भी पहुंचनी चाहिए। प्रारंभिक शिक्षा हेतु माता–पिता की सकारात्मक सोच और प्रयास शुरुआत में ही लंबे काल के लिए बच्चों की नींव को मजबूत करने में सहायक होती है।

- अभिभावकों को घर के अन्दर सीखने का एक बेहतर माहौल बनाना चाहिए क्योंकि यह बाद में बच्चों के विद्यालयी प्रदर्शन को प्रभावित करता है।
- बच्चों के साथ घर / केंद्र पर किया गया कार्य ईसीई कार्यक्रम के लिए काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें माता–पिता की भागीदारी, अभिभावकों का विश्वास, उनका नज़रिया और जिम्मेदारी भी शामिल है।
- माता–पिता और देखभालकर्ता के लिए परवरिश संबंधी सत्र आयोजित करके उनके क्षमताओं को बढ़ाएँ, जिससे वे अपने बच्चों के साथ कुछ महत्वपूर्ण गतिविधियाँ करके उनके सीखने और उनके विकास में मदद कर सकें (जैसे– कोई कहानी सुनाकर, कोई किताब पढ़कर, कोई खेल खेलकर, कोई गीत या कविता सुनाकर और सबसे महत्वपूर्ण, घर के अन्दर दैनिक दिनचर्या के बारे में उनसे बातचीत करके, आदि)।
- सही समय पर अपने बच्चों को दाखिला दिलाने के लिए माता–पिता की प्रतिबद्धता को सुनिश्चित करना।
- प्रारंभिक शिक्षा के महत्व, प्रारम्भिक कार्य, घर की भाषा में सीखना और खेल के माध्यम से सीखने के महत्व पर समुदाय के सदस्यों, माता–पिता और देखभाल करने वालों को जागरूक करना
- समुदाय के सदस्यों, माता–पिता और देखभाल करने वालों को बाल विकास के उपयुक्त बिंदुओं और उन तरीकों के बारे में संवेदनशील बनाना जिससे वे अपने बच्चों के सीखने और उनके समग्र विकास में सहायता कर सकें।

नियमित तौर पर अभिभावक-शिक्षक बैठक

आँगनवाड़ी कार्यकत्री या शिक्षक द्वारा महीने में एक बार या तीन महीने में एक बार आयोजित अभिभावक–शिक्षक बैठक में किसी भी औपचारिक प्रक्रिया के बिना बच्चों के मूल्यांकन एवं उनके प्रदर्शन संबंधी परिणामों को नियमित रूप से साझा करना चाहिए।

ई सी सी ई (प्रारंभिक शिक्षा एवं देखभाल) दिवस मनाना

प्रारंभिक शिक्षा एवं देखभाल (ई सी सी ई) से संबंधित विभिन्न पहलुओं के बीच बच्चों के अभिभावकों के साथ संबंध स्थापित करने तथा बच्चों के माता–पिता में जागरूकता पैदा करने के लिए 'ई सी सी ई' दिवस जैसे कार्यक्रम के आयोजन की योजना बनाई जानी चाहिए। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न प्रकार की गतिविधियों और खेलों का आयोजन भी किया जाना चाहिए।

ई सी सी ई में माता-पिता का शामिल होना (समावेशन)

घर बच्चे का पहला स्थान है और माता-पिता बच्चों के पहले शिक्षक हैं। माता-पिता बच्चे के प्राथमिक देखभालकर्ता होते हैं इसीलिए शिक्षकों को चाहिए कि वे समय-समय पर प्रत्येक ईसीई दिनचर्या व गतिविधियों के दौरान या किसी कार्यक्रम में माता-पिता को शामिल करें। शिक्षक माता-पिता को विभिन्न तरीकों से ईसीई में शामिल कर सकते हैं।

■ शिक्षक बच्चे की रुचि, व्यवहार और स्वास्थ्य, घर पर भाई-बहन / अन्य देखभालकर्ताओं के साथ संबंध पर बातें करके उनके व्यवहार को जानने व समझने में माता-पिता की मदद ले सकते हैं।

■ माता-पिता बच्चों के दैनिक दिनचर्या के दौरान या उनके मूल्यांकन से संबंधित किसी भी महत्वपूर्ण जानकारी या उनके व्यवहार में आए किसी विशेष बदलाव के बारे में पुष्टि करने का एक प्रमुख स्रोत हैं। उदाहरण के लिए, यदि बच्चा विद्यालय में गतिविधियों के दौरान रुचि नहीं लेता है या अनुचित व्यवहार करता है, तो शिक्षक को यह जानकारी हासिल करने के लिए माता-पिता के साथ चर्चा करनी चाहिए कि क्या बच्चा घर में भी इसी प्रकार व्यवहार कर रहा है और इसके पीछे क्या संभावित कारण रहा है।

■ विशेष कौशल वाले माता-पिता जैसे कि कलाकार, कुम्हार, बढ़ई, चित्रकार आदि को भी कक्षा पूर्व की गतिविधियों में शामिल कर सकते हैं जिससे उनको उपयुक्त तरीके से बुनियादी कौशल विकसित करने के लिए बच्चों के साथ जुड़ने का अवसर मिलता है। उदाहरण के लिए, एक चित्रकार को कला या चित्रकारी आदि में एक-दो सत्र आयोजित करने के लिए कहा जा सकता है। इसी तरह कोई एक अभिभावक जो अच्छी तरह से गाता है, उसे कक्षा में बच्चों के साथ कुछ बालगीत गुनगुनाने के लिए कहा जा सकता है।

प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा (ईसीई) में माता-पिता को शामिल करने के साथ-साथ उनको बाल विकास पर शिक्षित करना भी महत्वपूर्ण है जैसे- ईसीई का महत्व बताना, शुरुआती वर्षों के दौरान बच्चों को खेल विधि द्वारा सिखाने का महत्व बताना, या बच्चों पर घर के वातावरण का क्या प्रभाव पड़ता है आदि के लिए बैठकों का आयोजन कर या किसी नियोजित कार्यक्रम के द्वारा उनको बताया जा सकता है। माता-पिता को विभिन्न खेलों / गतिविधियों के बारे में भी बताया जाना चाहिए जो कि घर पर खेला जाता है जिससे घर के अन्दर उन्हें गतिविधियों में शामिल कर उनकी बुनियादी अवधारणाओं को और मजबूत किया जा सकता है।

विभिन्न कार्यक्रम जैसे- अभिभावक-शिक्षक बैठक, ईसीई दिवस आदि नियमित रूप से आयोजित किये जाने चाहिए। अभिभावक-शिक्षक बैठक में माता-पिता को कक्षा में की गई गतिविधियों, उनके बच्चे की भागीदारी और बच्चे ने क्या-क्या सीखा है के बारे में जानकारी देनी चाहिए। वहीं बच्चे की प्रगति को साझा करते समय उसकी क्षमता के बारे में बताना चाहिए न कि अन्य बच्चों के साथ उसकी तुलना की जानी चाहिए।

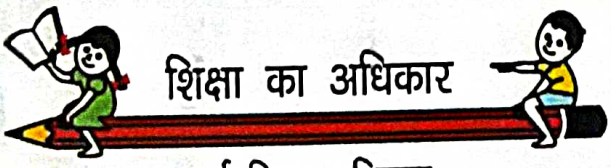

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

आवरण पृष्ठ: जनरल ऑफसेट प्रिंटिंग प्रेस प्रा० लि०, प्रयागराज, उ०प्र० द्वारा मुद्रित